



भारत के पहले निजी ऑर्बिटल रॉकेट विक्रम-1 का सफल प्रक्षेपण

हैदराबाद। भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए अपने पहले निजी तौर पर विकसित ऑर्बिटल लॉन्च व्हीकल विक्रम-1 का शनिवार को सफल प्रक्षेपण कर दिया। हैदराबाद स्थित स्पेस-टेक स्टार्टअप स्काईरूट एयरोस्पेस द्वारा विकसित इस रॉकेट ने आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) से दोपहर 12०8 बजे सफलतापूर्वक उड़ान भरी। इस सफलता के साथ भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र ने एक नए युग में प्रवेश कर लिया है।

रॉकेट के सफल प्रक्षेपण के बाद देशभर से बधाइयों का सिलसिला शुरू हो गया। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर स्काईरूट एयरोस्पेस की पूरी टीम को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत के पहले निजी तौर पर विकसित ऑर्बिटल लॉन्च व्हीकल की यह सफलता देश के तेजी से उभरते निजी अंतरिक्ष क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि स्पेस टेक्नोलॉजी और बढ़ती स्पेस इकोनॉमी में भारत की बढ़ती क्षमता का प्रमाण है तथा वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में देश की स्थिति को और मजबूत करेगी।

अत्याधुनिक विशेषताओं से लैस है विक्रम-1

तकनीकी दृष्टि से विक्रम-1 कई अत्याधुनिक विशेषताओं से लैस है। यह लगभग 350 किलोग्राम तक के पेलोड को पृथ्वी की निचली कक्षा में 450 किलोमीटर की ऊंचाई तक पहुंचाने में सक्षम है। इसके ऊपरी चरण में पूरी तरह से विक्रम-1 कई अत्याधुनिक विशेषताओं से लैस है। यह लगभग 350 किलोग्राम तक के पेलोड को पृथ्वी की निचली कक्षा में 450 किलोमीटर की ऊंचाई तक पहुंचाने में सक्षम है। इसके ऊपरी चरण में पूरी



तरह 3डी-प्रिंटेड लिक्विड इंजन का उपयोग किया गया है, जबकि इसका मुख्य ढांचा ऑल-कार्बन कंपोजिट सामग्री से निर्मित है, जिससे इसका वजन कम और मजबूती अधिक बनी रहती है।

वैश्विक स्तर पर मिलेगी नई पहचान

रॉकेट के पहले तीन चरणों में ठोस ईंधन तथा चौथे चरण में तरल ईंधन का इस्तेमाल किया गया है। इसे विशेष रूप से छोटे और मध्यम आकार के उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए डिजाइन किया गया है। इसकी एक बड़ी विशेषता यह भी है कि इसे कम समय में किसी भी उपयुक्त स्थान पर असेंबल कर लॉन्च किया जा सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि विक्रम-1 की सफलता भारत के निजी अंतरिक्ष उद्योग को वैश्विक वाणिज्यिक लॉन्च बाजार में नई पहचान दिलाने के साथ भविष्य में अंतरिक्ष मिशनों के लिए नए अवसर भी प्रदान करेगी।

सरकार की 12 वर्षों की लगातार कोशिशों से बेहतर हुई हैं रक्षा तैयारी: राजनाथ

नयी दिल्ली। रक्षा मंत्री श्राजनाथ सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर को भारत की आधुनिक और बेहतरीन रक्षा तैयारियों का सबूत बताते हुए कहा है कि ये तैयारी सरकार की पिछले 12 वर्षों की लगातार कोशिशों से और बेहतर हुई हैं और ये राष्ट्र सर्वोपरि तथा सेना सर्वोपरि की भावना से प्रेरित हैं। श्री सिंह ने शनिवार को यहां एक कार्यक्रम में ऑपरेशन सिंदूर को भारतीय रक्षा बलों की बेमिसाल बहादुरी की याद दिलाने वाला बताया। उन्होंने कहा कि सशस्त्र बलों ने आतंकवादियों और उन्हें पनाह देने वालों को मुंहतोड़ जवाब दिया, जो आतंकवाद के खिलाफ सरकार के सख्त रुख को दिखाता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि %आतंकवाद के खिलाफ ज़ीरो टॉलरेंस% सिर्फ एक बयान नहीं, बल्कि कार्रवाई का एक तरीका है। उन्होंने दोहराया कि भारत आतंकवाद के खिलाफ न केवल अपनी सीमा पर, बल्कि उनके गढ़ में सुसकर भी हमला करने की क्षमता रखता है। रक्षा मंत्री ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर जैसे मुश्किल ऑपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा करने में भारत के बदले हुए रक्षा क्षेत्र ने अहम भूमिका निभाई। उन्होंने इसे प्रौद्योगिकी पर आधारित युद्ध का एक शानदार उदाहरण और भारतीय उद्योगों पर सरकार के भरोसे का सबूत बताया।



भारत की बढ़ती वैज्ञानिक क्षमता और नवाचार का सशक्त प्रतीक है विक्रम-1 : सीएम साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने स्काईरूट एयरोस्पेस द्वारा विकसित भारत के पहले निजी कक्षीय प्रक्षेपण यान विक्रम-1 के सफल प्रक्षेपण पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने इसे देश के अंतरिक्ष इतिहास में एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में अंतरिक्ष क्षेत्र में किए गए व्यापक सुधारों और निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन की नीतियों के फलस्वरूप आज भारत वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में नई पहचान बना रहा है। विक्रम-1 का सफल प्रक्षेपण इसी परिवर्तनकारी सोच का परिणाम है।सरकारी एजेंसियां मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने स्काईरूट एयरोस्पेस की पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह उपलब्धि भारत को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी।



अमरनाथ यात्रा स्थगित

■ अब पवित्र गुफा की ओर नहीं बढ़ सकेंगे श्रद्धालु, प्रशासन ने इस वजह से लिया फैसला



इस वजह से रविवार, 19 जुलाई से बालटाल और नुनवान/चंदनवाड़ी (पहलगाम) दोनों ही बेस कैंपों से किसी भी श्रद्धालु को पवित्र गुफा की तरफ आगे बढ़ने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

समीक्षा के बाद होगी यात्रा

प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार, यह निर्लंबन पूरी तरह से एक एहतियाती कदम है ताकि पहाड़ी रास्तों पर श्रद्धालुओं को किसी भी तरह के मौसम जनित खतरे का सामना न करना पड़े। मौसम साफ होने और पूरे यात्रा मार्ग की सुरक्षा की व्यापक समीक्षा करने के बाद ही यात्रा दोबारा बहाल करने पर फैसला लिया जाएगा। यात्रा दोबारा शुरू होने के संबंध में जल्द ही ताजा अपडेट जारी किए जाएंगे। प्रशासन ने सभी तीर्थयात्रियों से अपील की है कि वे मौसम के मिजाज को देखते हुए आधिकारिक दिशा-निर्देशों का पालन करें और सुरक्षा व्यवस्था में सहयोग दें। गौरतलब है कि मौजूदा अमरनाथ यात्रा के दौरान अब तक 3.7 लाख से अधिक तीर्थयात्री पवित्र गुफा में बाबा बर्फानी के दर्शन कर चुके हैं।



रायपुर। छत्तीसगढ़ में मानसून एक बार फिर सक्रिय हो गया है, जिससे प्रदेश के कई हिस्सों में तेज बारिश का दौर शुरू हो गया है। शुक्रवार को राजधानी रायपुर में दिनभर बादल छाए रहे और रुक-रुक कर बारिश होती रही, जबकि बिलासपुर में 28 सेंटीमीटर बारिश दर्ज होने से बाढ़ जैसे हालात बन गए। कई इलाकों में सड़कें जलमग्न हो गईं और घरों में पानी घुसने की खबरें सामने आई हैं।मौसम विभाग के अनुसार अगले 24 से 48 घंटों के दौरान मध्य और उत्तरी छत्तीसगढ़ के अधिकांश क्षेत्रों में हल्की से मध्यम बारिश तथा कुछ स्थानों पर भारी से बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है। विभाग ने रायपुर, बलौदाबाजार, बेमेतरा, दुर्ग, गोरिला-पेंड्रा-मरवाही, जाजगीर-चांपा, कबीरधाम, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई, कोरबा, महासमुंद और सक्ती जिलों के लिए भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

प्रमुख समाचार

उद्धव को झटका, सांसदों का शिंदे गुट में विलय स्वीकारा

मुंबई. उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना के लिए एक बड़े झटके के तौर पर, लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने छह बागी सांसदों के महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना में विलय को मान्यता दे दी है। उद्धव ठाकरे गुट से अलग हुए इन छह सांसदों ने शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में अपने विलय की मान्यता दिलाने के लिए लोकसभा सचिवालय में एक आधिकारिक आवेदन सौंपा था। स्पीकर के कार्यालय ने अब उस अनुरोध को मंजूरी दे दी है, जिसके तहत लोकसभा में इन छह सांसदों को औपचारिक रूप से शिंदे गुट का सदस्य माना गया है। यह फैसला एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना के लिए एक बड़ी राजनीतिक बढ़त है और उद्धव ठाकरे गुट के लिए एक और झटका है, जो पार्टी के बंटवारे के बाद से ही अंदरूनी मतभेदों से जूझ रहा है। %ऑपरेशन टाइगर% पर महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि अगर मैं आपसे कहूँ कि जो छह सांसद हमारे साथ आए, उन्होंने ऐसा किसी निजी फायदे के लिए नहीं किया, तो आप शायद इसे झूठ मान लें।

पेपर लीक से कई परिवारों को दुख पहुंचा : राहुल गांधी

नईदिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने शनिवार को कहा कि पेपर लीक की वजह से कई परिवारों को बहुत दुख पहुंचा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि छात्रों की सुरक्षा और माता-पिता को न्याय दिलाने के लिए परीक्षा प्रणाली को फिर से बनाने की जरूरत है। एकस पर एक पोस्ट में गांधी ने रिया के पिता के साथ हुई अपनी बातचीत का जिक्र किया। रिया एक छात्रा थी जिसने कथित तौर पर नीट पेपर लीक विवाद के बाद आत्महत्या कर ली थी। गांधी ने कहा कि यह घटना कई परिवारों के दुख को दिखाती है। गांधी ने लिखा रिया के पिता, राजेश जी, अपनी बेटी को खोने के बाद इतने टूट गए थे कि उन्हें देखने वाले हर व्यक्ति की आँखों में आँसू आ गए। यह सिर्फ एक परिवार का दुख नहीं है। पेपर लीक ने ऐसे कई परिवारों से उनके बच्चों को छीन लिया है। उन्होंने कहा कि हर नाम के पीछे एक माँ और एक पिता हैं- जिनके लिए अब कोई कल नहीं है। इस सिस्टम को शुरू से बनाना होगा जहाँ बच्चों को तनाव नहीं, बल्कि सुरक्षा मिले।

वांगचुक मुद्दे पर केजरीवाल का मोदी पर सीधा हमला

नईदिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आलोचना की। उन्होंने जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को जंतर-मंतर पर चल रहे विरोध प्रदर्शन स्थल से हटाए जाने पर नाराजगी जताई और पीएम से अहंकार न दिखाने की अपील की। साथ ही कहा कि ऐसे व्यवहार के नतीजों की इतिहास गवाह है। एकस पर पोस्ट किए गए एक वीडियो संदेश में केजरीवाल ने कहा कि मैं मोदी जी से गुंजायिश करना चाहता हूँ कि ऐसा न करें, इतना अहंकार न दिखाएँ। इतना अहंकार ठीक नहीं है। इतिहास गवाह है कि जब भी किसी ने इतना अहंकार दिखाया है, तो वह व्यक्ति बर्बाद हो गया है। केजरीवाल ने आरोप लगाया कि वांगचुक को विरोध स्थल से गलत तरीके से हटाया गया और दावा किया कि इस कार्रवाई के दौरान उनके समर्थकों के साथ बुरा बर्ताव किया गया। उन्होंने कहा आज सुबह जब मैं उठा, तो सुना कि सोनम वांगचुक जी को बहुत गलत तरीके से उठाया गया।

लोकतंत्र में बातचीत ही एकमात्र रास्ता : ममता बनर्जी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को क्लाइमेट एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक के खिलाफ की गई कार्रवाई को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार बातचीत करने के बजाय शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों को दबा रही है। एकस पर एक पोस्ट में बनर्जी ने वांगचुक की सेहत को लेकर चिंता जताई और कहा कि सोनम वांगचुक की सेहत और भलाई को लेकर मैं बहुत चिंतित हूँ। उन्होंने सिर्फ बातचीत की मांग की थी, लेकिन हफ्तों से उनकी अपील पर कोई जवाब नहीं दिया गया है। लोकतंत्र में शांतिपूर्ण असहमति पर बातचीत होनी चाहिए, न कि चुप्पी साधी जानी चाहिए। उनकी आवाज को नज़रअंदाज़ किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे अनगिनत युवा भारतीयों की आवाज को लगातार नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है। उन्होंने यह भी मांग की कि वांगचुक को प्राइवेट अस्पताल में शिफ्ट करने की इजाजत दी जाए और कहा कि अगर जरूरत हो तो नागरिक इसका खर्च उठाने के लिए आज़ाद होने चाहिए।

अभिषेक बनर्जी के दफ्तर पर बुलडोजर की कार्रवाई

कोलकाता। दक्षिण 24 परगना जिला प्रशासन ने शनिवार को अमताला स्थित तुणमूल कांग्रेस सांसद अभिषेक बनर्जी के पार्टी कार्यालय को ध्वस्त करना शुरू कर दिया। क्योंकि जांच में यह पाया गया कि इसका निर्माण स्वीकृत भवन योजना के बिना और लागू नियमों का उल्लंघन करते हुए किया गया था। यह जानकारी एक वरिष्ठ अधिकारी ने दी है। उन्होंने बताया कि भारी सुरक्षा के बीच खुदाई करने वाली मशीनों का उपयोग करके विध्वंस कार्य किया जा रहा था। पुलिस और केंद्रीय बलों को घटनास्थल के आसपास तैनात किया गया था। एहतियात के तौर पर अग्निशमन और आपातकालीन सेवा कर्मी भी मौके पर मौजूद थे। इस विध्वंस के बाद इलाके में जमा हुए भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों में जश्न का माहौल छा गया, जिन्होंने अपनी पार्टी के समर्थन में नारे लगाए। अभिषेक डायमंड हार्बर निर्वाचन क्षेत्र से टीएमसी के लोकसभा सांसद हैं। अमताला इसी निर्वाचन क्षेत्र का हिस्सा है। आमतला से भाजपा विधायक अग्निश्वर नस्कर ने आरोप लगाया कि अभिषेक बनर्जी के पार्टी कार्यालय का निर्माण भवन नियमों का उल्लंघन करते हुए किया गया था और उन्होंने जिला प्रशासन की कार्रवाई का स्वागत किया। नास्कर ने कहा।

परिसीमन बिल मानसून सत्र में बहेगा या तैरेगा

विजय विद्रोही

संसद का मॉनसून सत्र 20 जुलाई से शुरू हो रहा है। यह 13 अगस्त तक चलेगा। कुल 25 दिन, शनिवार , रविवार हटा दिए जाएं तो 19 दिन संसद बैठेगी। 3 दिन प्राइवेट मेंबर बिल के होंगे तो कुल मिलाकर 16 दिन ही असली काम हो पाएगा। इन 16 दिनों में मोदी सरकार आधा दर्जन बिल पास कराने की कोशिश करेगी। उधर विपक्ष जोर देगा कि आधा दर्जन मुद्दों पर बहस हो। यानी हंगामा होना तय है। इस बीच लोकसभा में तस्वीर बदली-बदली नजर आएगी।

द्रमुक के 22 सांसद कांग्रेस से दूरी बनाकर बैठे दिखाई देंगे। टी.एम.सी. के 20 सांसद सत्ता पक्ष के साथ नजर आएंगे। उद्धव ठाकरे के 6 सांसद भी एकनाथ शिंदे की शिवसेना के साथ



नजदीकियां, ट्रम्प प्रशासन से होने वाली संभावित व्यापार डील आदि-आदि। उधर सत्ता पक्ष ने विपक्ष में संधमारी कर उस एकता को तोड़ने की कोशिशें तेज कर दी हैं जिसकी वजह से पिछली बार परिसीमन बिल तीन-चौथाई बहुमत न होने के कारण गिर गया था। इस बार राज्य सभा में तो दो-तिहाई बहुमत का लगभग जुगाड़ हो गया है। वहां भाजपा को 161 सांसद चाहिए। मोदी सरकार के पास 155 हैं; इनमें बंगाल से 3 सांसद शामिल हैं; प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जट्टाया जाना, कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी का खीरा सबसिडी कांड, बढ़ती महंगाई, खाड़ी युद्ध से जुड़ी विदेश नीति, चीन और बंगलादेश के बीच बढ़ती

सांसदों के समर्थन की उम्मीद मोदी सरकार ने छोड़ी नहीं है। इतना तय है कि इस बार पूरा होमवर्क करने के बाद ही मोदी सरकार परिसीमन बिल को संशोधित रूप से पेश करेगी। संशोधन यह होगा कि इस बार सरकार बिल में लिख कर देगी कि सभी राज्यों की लोकसभा सीटों में 50 फीसदी का इजाफा होगा। परिसीमन में 170 लोकसभा सीटों का स्वरूप नए सिरे से तय किए जाने की बात की जा रही है। 69 वर्तमान लोकसभा सीटों के 2 और 111 सीटों के 3 टुकड़े कर दिए जाएंगे। विभाजन इस तरह होगा, जिससे विपक्ष का वोट बैंक 2 या 3 सीटों में विभाजित हो जाए। कुल सीटें 850 के आसपास करना और उनमें से एक-तिहाई

महिलाओं के खाते में डालना 2029 की चुनावी गणित को बदलने की पूरा क्षमता रखता है। अगर परिसीमन बिल पास हो जाता है तो उसका सीधा असर अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों पर पड़ना तय है। मानसून सत्र में एक अन्य विवादित बिल पेश होना है, जिस पर व्यापक हंगामा होना भी तय है। बिल कहता है कि अगर प्रधानमंत्री, उनके मंत्री, मुख्यमंत्री, उनके मंत्रियों पर गंभीर आपराधिक मामला दर्ज होता है और गिरफ्तारी के 30 दिन तक भी अगर जमानत नहीं मिलती है तो आरोपी अपने पद पर से अपने आप ही हटा हुआ माना जाएगा। संसद की संयुक्त समिति ने अपनी रिपोर्ट दे दी है। इसमें कुछ संशोधन किए गए हैं। अब सिर्फ उन्हीं मामलों को गंभीर माना जाएगा, जिनमें

आरोप सिद्ध होने पर 5 साल या उससे ज्यादा की सजा हो। इसके अलावा अगर 30 दिन बाद पद से हटे व्यक्ति को मान लीजिए कि 35 या 40 दिन बाद जमानत मिल जाती है तो वह अपने पद पर फिर से बहाल किया जा सकता है? यह देखना दिलचस्प होगा कि संशोधन पर विपक्ष का सुर क्या रहता है। विपक्ष मनीष सिंसोदिया, अरविंद केजरीवाल और हेमंत सोरेन का उदाहरण दे रहा है, जिन्हें जमानत मिलने में महीनों लग गए। एक देश एक चुनाव का बिल भी क्या सरकार मानसून सत्र में रखने को उस्तुक है? एक देश एक चुनाव पर संसद की संयुक्त समिति की अंतिम रिपोर्ट 10 अगस्त को सदन में रखी जाएगी। उसके बाद सिर्फ 3 दिन ही बचेगे।

हरित ऊर्जा क्रांति का ऐतिहासिक शंखनाद

विनोद कुमार सिंह

भारतीय रेल केवल लोहे की पटरियों पर दौड़ने वाली रेलगाड़ियों का विशाल नेटवर्क नहीं है,बल्कि यह भारत की आर्थिक शक्ति,सामाजिक समरसता,राष्ट्रीय एकता और तकनीकी प्रगति का सबसे सशक्त प्रतीक भी है। लगभग डेढ़ सौ वर्षों से अधिक की अपनी गौरवशाली यात्रा में भारतीय रेल ने अनेक ऐतिहासिक पड़ाव पार किए हैं। स्टीम इंजन से प्रारम्भ हुई यह यात्रा डीजल और फिर विद्युत इंजनों तक पहुँची,और अब भारत हरित ऊर्जा के उस नए स्वर्णिम युग में प्रवेश कर चुका है,जहाँ रेलगाड़ियाँ जीवाश्म ईंधन नहीं,बल्कि स्वच्छ हाइड्रोजन ऊर्जा के सहारे आगे बढ़ेंगी। हरियाणा के ऐतिहासिक नगर जींद से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत की पहली हाइड्रोजन ट्रेन को हरी झंडी दिखाया जाना केवल एक नई रेल सेवा का शुभारम्भ नहीं,बल्कि विकसित भारत,आत्मनिर्भर भारत और हरित भारत के साझा संकल्प का उद्घोष है। यह क्षण भारतीय रेल के इतिहास में उसी प्रकार स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा,जैसे कभी पहली रेलगाड़ी के संचालन, राजधानी एक्सप्रेस, शताब्दी, मेट्रो अथवा वंदे भारत ट्रेनों के शुभारम्भ को याद किया जाता है। जींद का चयन भी अत्यंत प्रतीकात्मक है। हरियाणा का यह नगर केवल एक रेलवे जंक्शन नहीं,बल्कि इतिहास, आस्था और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत केंद्र है। महाभारतकालीन परम्पराओं से जुड़े इस क्षेत्र का उल्लेख अनेक ऐतिहासिक संदर्भों में मिलता है। जनश्रुतियों के अनुसार इसका संबंध देवी जयन्ती की आराधना से भी माना जाता है। आज यही भूमि भारत की आधुनिक वैज्ञानिक चेतना और हरित प्रौद्योगिकी के नए अध्याय की साक्षी बन रही है। अतीत की सांस्कृतिक विरासत और भविष्य की वैज्ञानिक सोच का यह अद्भुत संगम जींद को राष्ट्रीय मानचित्र पर नई पहचान प्रदान करता है। रेलवे की दृष्टि से भी जींद का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उत्तर रेलवे का यह प्रमुख जंक्शन वर्षों से हरियाणा,दिल्ली, पंजाब और राजस्थान को जोड़ने वाला रणनीतिक रेल केंद्र है। बदलते समय के साथ इसका आधुनिकीकरण हुआ और अब यही जंक्शन भारत की हरित रेल क्रांति का प्रारम्भिक केंद्र बन गया है। भारतीय रेल ने पिछले एक दशक में परिवर्तन की ऐसी गति देखी है,जिसकी कल्पना कुछ वर्ष पहले तक कठिन थी। वंदे भारत ट्रेनों का विस्तार, अमृत भारत एक्सप्रेस का संचालन, समर्पित माल गलियारे,कवच जैसी स्वदेशी सुरक्षा प्रणाली,अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास,लगभग सम्पूर्ण ब्रॉडगैज नेटवर्क का विद्युतीकरण, आधुनिक सिग्नलिंग व्यवस्था तथा डिजिटल यात्री सेवाओं ने रेलवे की कार्यसंस्कृति और छवि दोनों को बदल दिया है। अब हाइड्रोजन ट्रेन इस परिवर्तन यात्रा का अगला और सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव बनकर सामने आरहे हैं। हाइड्रोजन प्यूल सेल तकनीक भविष्य के स्वच्छ परिवहन की आधारशिला मानी जा रही है। इस तकनीक में डीजल का उपयोग नहीं होता। ईंधन सेल में हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक प्रक्रिया से विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती है,जिससे ट्रेन संचालित होती है। इस पूरी प्रक्रिया में कार्बन डाइऑक्साइड या अन्य प्रदूषक गैसों का उत्सर्जन नहीं होता,केवल जलवाष्प निकलती है। यही कारण है कि इसे ज़ीरो एमिशन ट्रांसपोर्ट की दिशा में सबसे प्रभावी तकनीकों में शामिल किया जाता है। यूरोप,जापान, दक्षिण कोरिया और चीन जैसे देश पहले से इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। ऐसे समय में भारत का स्वदेशी तकनीक और अपनी इंजीनियरिंग क्षमता के बल पर इस क्षेत्र में प्रवेश करना केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं,बल्कि वैश्विक ऊर्जा परिवर्तन में भारत की सक्रिय भागीदारी का संकेत भी है।

पुराण दिग्दर्शन

विश्व विद्या-निरुपणाध्यायः (दशम अध्याय)

(गतांक से आगे....)
न सा विद्या, न तज्ज्ञानं, न तच्छिल्पं न सा कला।
न तत्तत्त्वं हि गहनं, पुराणैर्यत्र गीयते।।
तत्राग्र्यसम्भवत्वं यत्, पर-प्रत्यय-बुद्धिभिः।
श्राद्धयुते, तदेवार्च, समाधाय निरूप्यते।।
वेदस्याख्याता सायणाचार्य ने ऋग्वेद उपोदुधात में पुराणों को समस्त विद्याओं का भण्डार होने के कारण विद्यास्थान की उपाधि से विभूषित किया है, जैसा कि हम प्रमाणसङ्ग्रहाध्याय में लिख श्राये हैं। इसी प्रकार ग्रथ याज्ञवल्क्य ने भी अपने प्रसिद्ध धर्मशास्त्र में पुराण को चतुर्दश विद्याओं में परिगणित करते हुये उन्हें प्रथम स्थान दिया है। इस अध्याय में हम कतिपय विद्याओं का प्रप्रमाण निरूपण करके यह बतलाने की चेष्टा करेंगे कि वास्तव में पुराण ग्रन्थ विद्यास्थान उपाधि के सर्वथा योग्य ही हैं।
क्योंकि पुराणों में इतिहास (History) व्याकरण (Grammer) निरुक्त (Philology) पित्रुविद्या

(Anthropology) गणित विद्या (Methematics) देवविद्या (Physical Geography) निधि विद्या (Minerology) तर्क-विद्या (Logic) नीति शास्त्र (Ethics) देव-विद्या (Physical Science) ब्रत्सम-विद्या (Brahm Vidya) भूत-विद्या (Zoology-Anatomy etc.) क्षत्र-विद्या (Military Sceince and Art of Government) नक्षत्र-विद्या (Astronomy) और गाथा शास्त्र (Mythology) आदि-आदि समस्त विषयों का सर्वाङ्गपूर्ण एवं विश्वस्त वर्णन विद्यमान है। यद्यपि हम ग्रन्थ-विस्तरभयात्, इस अध्याय में उक्त सब विद्याओं का निरूपण नहीं कर सकते, तथापि (1) वर्तमान समय में जिन-जिन विषयों की विद्वत्समाज में प्रायः चर्चा चलती है तथा (2) जिन जिन बातों को वर्तमान विज्ञान का ही अभूतपूर्व चमत्कार कहा जाता है।

क्रमशः ...



पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में असंतोष

आनंद कुमार

पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) या पीओके में पिछले कुछ सप्ताह से जारी जनांदोलन अब केवल एक स्थानीय राजनीतिक विवाद नहीं रह गया है। यह आंदोलन पाकिस्तान के उस आधिकारिक नैरेटिव को चुनौती देने लगा है, जिसे इस्लामाबाद दशकों से अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने प्रस्तुत करता रहा है।

जून में शुरू हुआ यह आंदोलन प्रारंभ में 45 सदस्यीय विधानसभा की 12 आरक्षित सीटों के विरोध तक सीमित था, पर अब यह आर्थिक उपेक्षा, राजनीतिक अधिकारों, प्रशासनिक जवाबदेही और क्षेत्र की वास्तविक स्वायत्तता जैसे व्यापक मुद्दों का प्रतीक बन गया है। आज यह आंदोलन इस सवाल की भी सामने ला रहा है कि क्या पीओजेके के लोग वास्तव में उस राजनीतिक व्यवस्था से संतुष्ट हैं, जिसे पाकिस्तान ‘आजाद जम्मू-कश्मीर’ के रूप में पेश करता है।

इस आंदोलन की शुरुआत जम्मू-कश्मीर ज्वाइंट अवायि एक्शन कमेटी (जेएएससी) को उस मांग से हुई, जिसमें विधानसभा की उन 12 आरक्षित सीटों को समाप्त करने की बात कही गई, जो 1947 के बाद पाकिस्तान गए जम्मू-कश्मीर शरणार्थियों के लिए सुरक्षित हैं। आंदोलनकारियों का तर्क है कि ये प्रतिनिधि पीओजेके में रहते ही नहीं हैं, फिर भी वहां की राजनीति और सरकार के गठन को प्रभावित करते हैं। इससे स्थानीय जनता का लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व कमजोर होता है और इस्लामाबाद के सत्ता प्रतियोग को क्षेत्र की राजनीति में हस्तक्षेप का अवसर मिलता है। हाल ही में क्षेत्र के सर्वोच्च न्यायालय ने इन सीटों को सांविधानिक संरक्षण प्राप्त होने की बात कही, लेकिन इस निर्णय से विवाद समाप्त नहीं हुआ। इसके विपरीत, आंदोलन और अधिक व्यापक होता चला गया।

पिछले कई वर्षों से पीओजेके में महंगाई, बेरोजगारी, बिजली की ऊँची दरें, सब्जिडी वाले आटे की कमी और विकास की धीमी गति जैसे मुद्दे



लगातार लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि जिन क्षेत्रों में बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ हैं और जहां से पाकिस्तान के अन्य हिस्सों को बिजली उपलब्ध कराई जाती है, वहीं के लोगों को बिजली के सर्वाधिक बिल चुकाने पड़ते हैं। लोगों को यह भी शिकायत है कि क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का लाभ स्थानीय आबादी को नहीं मिलता, जबकि विकास परियोजनाओं के कारण विस्थापन और पर्यावरणीय नुकसान का बोझ उन्हें ही उठाना पड़ता है। यही आर्थिक असंतोष धीरे-धीरे राजनीतिक असंतोष में बदल गया। जेएएससी का उदय भी इसी बदलती राजनीतिक चेतना का परिणाम है। यानी आर्थिक समस्याओं ने लोगों को केवल राहत की मांग तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्होंने शासन की पूरी संरचना पर सवाल उठाने शुरू कर दिए हैं।

पाकिस्तान सरकार ने इस आंदोलन से संवाद स्थापित करने के बजाय मुख्यतः दमन का रास्ता अपनाया। जेएएससी पर आतंकवाद निरोधी कानूनों के तहत प्रतिबंध लगा दिया गया, उसके नेताओं और समर्थकों को गिरफ्तार किया गया, इंटरनेट और मोबाइल सेवाओं पर पाबंदियां लगाई गईं और हजारों

ललित गर्ग

भारत की पहचान केवल उसकी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक दर्शन से नहीं है, बल्कि उन मंदिरों से भी है जो करोड़ों लोगों की आस्था, विश्वास और जीवन का आधार हैं। अयोध्या का श्रीराम मंदिर, बद्रीनाथ धाम, माता वैष्णोदेवी, तिरुपति, काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, सालासर बालाजी, खाटू श्यामजी जैसे मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा के जीवंत प्रतीक हैं। इन मंदिरों में प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु इस विश्वास के साथ पहुंचते हैं कि यहां उन्हें केवल भगवान के दर्शन ही नहीं, बल्कि आत्मिक शांति और नैतिक ऊर्जा भी प्राप्त होगी। लेकिन जब इन्हीं मंदिरों से चढ़ावे की चोरी, वित्तीय अनियमितताओं, वीआईपी संस्कृति, पुजारियों अथवा कर्मचारियों के अनुचित आचरण और श्रद्धालुओं के साथ दुर्व्यवहार की खबरें सामने आती हैं, तब केवल कोई संस्था बदनाम नहीं होती, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था घायल होती है। हाल के वर्षों में श्रीराम मंदिर, बद्रीनाथ और अब माता वैष्णोदेवी मंदिर में चढ़ावे से जुड़े कथित भ्रष्टाचार के मामलों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मंदिरों की व्यवस्था को केवल धार्मिक भावना के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। जिस धन को श्रद्धालु भगवान का अर्पण मानकर समर्पित करते हैं, वह किसी व्यक्ति या समूह की निजी संपत्ति नहीं है। उस धन का प्रत्येक रुपया सार्वजनिक विश्वास की धरोहर है। यदि उसी में अपारदर्शिता या चोरी का संदेह पैदा हो जाए तो यह केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि धार्मिक विश्वास के साथ विश्वासघात है।

मंदिरों में बढ़ती अव्यवस्था का दूसरा गंभीर पक्ष है-वीआईपी दर्शन संस्कृति। आज देश का सामान्य श्रद्धालु कई-कई घंटे कतार में खड़ा रहता है। चूड़, महिलाएं, दिव्यांग और छोटे बच्चों के साथ आए परिवार कठिन परिस्थितियों में अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं। लेकिन जैसे ही कोई मंत्री, विधायक, अधिकारी या प्रभावशाली व्यक्ति पहुंचता है, सामान्य दर्शन रोक दिए जाते हैं और वीआईपी दर्शन शुरू हो जाते हैं। आम श्रद्धालु की लाइन रोक दी जाती है, उसके दर्शन का समय बाधित होता है और उसे यह एहसास कराया जाता है कि भगवान के दरबार में भी सभी बराबर नहीं हैं। यह स्थिति भारतीय संस्कृति और धर्म की मूल भावना के

ज्ञान/मीमांसा

मंदिरों में सुशासन की नई क्रांति का सूत्रपात हो



विपरीत है। हमारे शास्त्र कहते हैं कि ईश्वर के समक्ष राजा और रंक में कोई भेद नहीं होता। यदि मंदिरों में भी सामाजिक और राजनीतिक विशेषाधिकार का प्रदर्शन होगा तो यह धर्म के मूल स्वरूप का अपमान है। मंदिरों को लोकतांत्रिक समानता और आध्यात्मिक समरसता का सर्वोच्च उदाहरण बनाा चाहिए, न कि सामाजिक असमानता का मंच।

आज आवश्यकता इस बात की है कि पूरे देश में ‘समान मन्दिर दर्शन नीति’ लागू की जाए। राष्ट्रीय सुरक्षा या अत्यंत विशिष्ट संवैधानिक परिस्थितियों को छोड़कर किसी भी व्यक्ति को सामान्य श्रद्धालुओं की कतार से अलग विशेष दर्शन का अधिकार नहीं मिलना चाहिए। यदि किसी कारणवश सुरक्षा व्यवस्था आवश्यक हो, तब भी आम श्रद्धालुओं के दर्शन बाधित नहीं होने चाहिए। भगवान के दरबार में सबसे बड़ा वीआईपी केवल श्रद्धा होनी चाहिए, पद और सत्ता नहीं। इसी प्रकार मंदिरों की चढ़ावा व्यवस्था में व्यापक सुधार की आवश्यकता है। आज डिजिटल भारत का युग है, फिर भी अनेक मंदिरों में दान और चढ़ावे की पारदर्शी व्यवस्था विकसित नहीं हो सकी है। प्रत्येक बड़े मंदिर में दान-पात्रों की इलेक्ट्रॉनिक निगरानी, सीसीटीवी कैमरे, बारकोड आधारित सीलिंग, नियमित स्वतंत्र ऑडिट तथा प्रत्येक माह आय-व्यय का सार्वजनिक विवरण वेबसाइट और सूचना पट्ट पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए। श्रद्धालु को यह जानने का अधिकार है कि उसके द्वारा दिया गया धन कहाँ और किस उद्देश्य में उपयोग किया जा रहा है।

इसके साथ ही मंदिर प्रशासन में केवल

धार्मिक पहचान ही नहीं, बल्कि चरित्र, ईमानदारी और प्रशासनिक दक्षता को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मंदिर प्रबंधन समितियों में ऐसे व्यक्तियों को स्थान मिले जिनकी सामाजिक प्रतिष्ठा निष्कलंक हो, जिनका सार्वजनिक जीवन पारदर्शी रहा हो और जिन पर किसी प्रकार के भ्रष्टाचार या आपराधिक आरोप न हों। समय-समय पर उनके कार्यों का स्वतंत्र मूल्यांकन भी किया जाए। मंदिर प्रबंधन किसी का विशेषाधिकार नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व है। मंदिरों में सेवा करने वाले पुजारियों, कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों के लिए भी आचार-संहिता बनाई जानी चाहिए। श्रद्धालुओं के साथ दुर्व्यवहार, अभद्र भाषा, दलालों से मिलीभगत, नशाखोरी या किसी भी प्रकार का अनुशासनहीन व्यवहार पाए जाने पर तत्काल कार्रवाई हो। सालासर बालाजी में बाउंसरों द्वारा श्रद्धालु की पिटाई और खाटू श्यामजी में मुख्य पुजारी से जुड़े विवाद जैसे प्रसंग यह संकेत देते हैं कि केवल धार्मिक पहचान पर्याप्त नहीं, बल्कि नैतिक अनुशासन भी उतना ही आवश्यक है।

मंदिरों में दलाल संस्कृति भी समाप्त की जानी चाहिए। दर्शन, प्रसाद, पूजा और विशेष अनुग्रहों के नाम पर होने वाली अनधिकृत वसूली श्रद्धालुओं के विश्वास को कमजोर करती है। सभी सेवाओं की दरें सार्वजनिक हों, ऑनलाइन बुकिंग उपलब्ध हो और किसी भी अतिरिक्त वसूली पर कठोर दंड का प्रावधान हो। भारत आज विश्व का आध्यात्मिक केंद्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। श्रीराम मंदिर के निर्माण के बाद दुनिया भर से करोड़ों लोग भारतीय

डॉ. खूबचंद बघेल



और 1925 में नागपुर से चिकित्सा परीक्षा उत्तीर्ण कर

असिस्टेंट मेडिकल ऑफिसर के रूप में कार्यभार संभाला।

हालांकि, वे पेशे से एक डॉक्टर थे, लेकिन देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना के प्रभाव में आकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी।

महात्मा गांधी से प्रभावित होकर उन्होंने गांव-गांव घूमकर असहयोग आंदोलन का प्रचार किया। 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने सरकारी नौकरी त्याग दी और जेल भी गए। 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेते हुए उन्हें कुल तीन बार जेल जाना पड़ा, जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें ढाई साल की कठोर कैद भी हुई।

स्वतंत्रता के बाद भी उनका संघर्ष जारी रहा। 1951 में कांग्रेस से मतभेद के कारण वे आचार्य कृपलानी की किसान मजदूर पार्टी में शामिल हुए और उसी साल विधानसभा सदस्य निर्वाचित हुए। वे 1962 तक

विधायक और बाद में 1967 में राज्यसभा सदस्य बने। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन कृषि, ग्रामीण विकास और आदिवासी कल्याण को समर्पित कर दिया। छत्तीसगढ़ के अनेक आदिवासी और कृषक आंदोलनों में वे नेतृत्वकर्ता और प्रेरणा स्रोत रहे। वे मानते थे कि कृषि को भी उद्योग के समान महत्व मिलना चाहिए और उन्होंने इसी सोच को आधार बनाकर अनेक पहल कीं।

खूबचंद बघेल केवल राजनीतिक और

सामाजिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहे, वे छत्तीसगढ़ी भाषा, लोक साहित्य और सांस्कृतिक चेतना के भी सजग संरक्षक थे। उन्होंने 1967 में रायपुर में ‘छत्तीसगढ़ भ्रातृसंघ’ की स्थापना की, जिसका उद्देश्य छत्तीसगढ़ी भाषा और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करना था। उनका साहित्यिक और लोकभाषाई योगदान भी अद्वितीय रहा।

उनका देहावसान 22 फरवरी 1969 को हुआ, लेकिन उनके विचार और कार्य आज भी छत्तीसगढ़ की आत्मा में जीवित हैं। उनकी स्मृति में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही हैं, जैसे डॉ. खूबचंद बघेल कृषक रत्न पुरस्कार (राज्य स्तरीय सम्मान), खूबचंद बघेल स्वास्थ्य सहायता योजना, और दुर्गा में खूबचंद बघेल शाककीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय शामिल है।

आज का इतिहास

- 1870 फ्रांस ने प्रशिया के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
- 1900 फ्रांस की राजधानी पेरिस में पहली मेट्रो रेल चली थी। दुनिया की पहली मेट्रो सेवा लंदन में शुरू हो चुकी थी।
- 1903 फ्रांसीसी साइकिल चालक मॉरिस गारिन ने पहला टूर डी फ्रांस जीता।
- 1908 फेयेनोर्ड रोटरडैम, आज नीदरलैंड में बड़ी तीन प्रोफेशनल फुटबॉल टीमों में से एक, क्लब विल्हेल्मिना इना पब के रूप में स्थापित किया गया था।
- 1916 प्रथम विश्व युद्ध-ऑस्ट्रेलिया के तहखाने में सबसे खराब 24 घंटे तब हुआ जब ऑस्ट्रेलियाई सेनाओं ने फ्रांसीस ऑफ फ्लेस से युद्ध में जर्मनों पर उनके असफल हमले में भारी नुकसान उठाया।
- 1926 फ्रांस में एडवर्ड हेरियोट के नेतृत्व में दूसरी बार सरकार बनी।
- 1941 उत्स्केगी आर्मी एयर फील्ड औपचारिक रूप से खोला गया।
- 1947 बर्मा के राष्ट्रवादी आंग सान और उनके नवगठित मंत्रिमंडल के छह सदस्यों की एक कैबिनेट बैठक के दौरान हत्या कर दी गई थी।
- 1961 पहली बार विमान में फिल्म दिखायी गयी।
- 1963 जॉय वॉकर विमान के जरिये अन्तरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति बने।
- 1967 अमेरिका ने चंद्र कक्षा मे प्रवेश करने के लिये ‘एक्सप्लोरर–35’ लॉंच किया।
- 1979 निकारगुआ देश की जनता की क्रान्ति सफल हुई।
- 1980 तुर्की के पूर्व प्रधान मंत्री निहट एरीम को तुर्की के इस्तांबुल में 2 बंदूकधारियों ने जान से मार दिया।
- 1992 यह कार बम विरोधी माफिया जज पाओलो बोर्सेलिनो और इटली के पालेर्मो में पांचपुलिसकर्मियों की हत्या कर दी गई थी, यह मित्र और सहकर्मियों गियोवन्नी फलकोन की हत्या के दो महीने से भी कम समय के बाद।
- 1997 अर्नातिम आयरिश रिपब्लिकन आर्मी ने उत्तरी आयरलैंड में ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपने 25 साल के अभियान को समाप्त करने के लिए स्थायी रूप से अपने युद्धविराम को फिर से शुरू किया।
- 2003 रूस के अंतरिक्ष यात्री यूरी माले थाको अंतरिक्ष में शादी रचाने वाले पहले व्यक्ति बने।
- 2005 जॉन जी। रॉबर्ट्स, जूनियर को यूनाइटेड स्टेट्स सुप्रीम कोर्ट में नामांकित किया गया है।
- 2008 अमेरिका ने प्रशान्त महासागर में लक्ष्य निर्धारित कर लम्बी दूरी तक मार कर सकने में सक्षम मिसाइल का परीक्षण किया।

4

शरद पवार की सियासी चुप्पी किसी बड़े राजनीतिक समझौते का संकेत

आदिति फडणीस

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) या राकांपा (एसपी) के पास लोक सभा में आठ सांसद, राज्य सभा में एक सांसद और महाराष्ट्र विधान सभा में 10 विधायक हैं। दलबदल निरोधक कानून के तहत अयोग्यता से बचने और अपनी सदस्यता न खो देने के लिए कम से कम छह सांसदों को दलबदल करना होगा।

पार्टी के दिग्गज नेता शरद पवार ने कथित तौर पर वार्ताकारों से कहा, ‘जब सभी नौ मिल सकते हैं तो छह ही क्यों लेना?’ यह बात उन्होंने संविधान (131वां संशोधन) विधेयक, 2026 के पारित होने के लिए समर्थन मांगने पर कही। यह विधेयक परिसीमन विधेयक, 2026 और केंद्र शासित प्रदेश कानून (संशोधन) विधेयक, 2026 सहित तीन विधेयकों के पैकेज का मुख्य संवैधानिक हिस्सा है, जिसे सरकार ने अप्रैल में पेश किया था लेकिन बहुमत की कमी के कारण पारित नहीं कर सकी थी।

पूरी संभावना है कि राकांपा (एसपी) अपने समर्थकों और प्रतिष्ठा को बचाए रखने के वास्ते तथा शिवसेना (उद्धव ठाकरे) और

तृणमूल कांग्रेस की तरह पतन से बचने के लिए विधेयकों के पक्ष में मतदान करेगी। संसद में तृणमूल कांग्रेस की हालत बहुत खराब है। उसके सदस्य भाजपा में शामिल नहीं हुए, लेकिन उन्होंने एक नई पार्टी बना ली है। शिवसेना के सांसदों ने भाजपा में शामिल होने के लिए पार्टी छोड़ दी।

असल बात यह है कि अब उनमें से कोई भी उस पार्टी का सदस्य नहीं है जिसने उन्हें संसद भेजा था। पवार ने अपनी पार्टी को इस तरह के प्रयासों से बचा लिया है, भले ही इसका मतलब ‘इंडिया’ गठबंधन में अपने सहयोगियों को धोखा देना हो। इज्जत बचाने के लिए कुछ ‘शर्तें’ रखी गई हैं- राकांपा (एसपी) तभी विधेयकों के पक्ष में मतदान करेगी जब प्रत्येक राज्य से भेजे जाने वाले सांसदों की संख्या में 50 फीसदी की वृद्धि की जाएगी।

गृह मंत्री अमित शाह पहले ही कह चुके हैं कि वे एक संशोधित विधेयक पेश करेंगे जिससे प्रत्येक राज्य की संसदीय सीटों की कुल संख्या में वृद्धि होगी, इसलिए यह ‘शर्त’ सरासर बेबुनियाद है।

शरद पवार भाजपा के साथ नजदीकियां



पहली बार नहीं बढ़ा रहे हैं। वर्ष 1978 में, जब उन्होंने कांग्रेस के नेतृत्व वाली वसंतदादा पाटिल गठबंधन सरकार को गिरा दिया और कई वामपंथी झुकाव वाले विधायकों के साथ सत्ता छोड़कर समानांतर कांग्रेस का गठन किया और 38 वर्ष की आयु में मुख्यमंत्री बने, तब जनसंघ सरकार का हिस्सा था। आरएसएस-जनसंघ के प्रमुख सदस्य उत्तमराव पाटिल मंत्री बने। दोनों पक्षों के बीच आपसी सम्मान है।

वर्ष 2016 में, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के

चरम पर एक सार्वजनिक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था- ‘पवार ने विधायक या सांसद के रूप में 50 वर्ष पूरे कर लिए हैं, जो भारतीय राजनीति में अपने आप में एक उपलब्धि हैं। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि पवार ने गुजरात में मेरे शुरुआती दिनों में मेरा हाथ थामा और मुझे चलना सिखाया।’

भाजपा का एक बड़ा वर्ग पवार से नफरत कर सकता है, लेकिन वह यह भी मानता है कि पवार आधुनिक महाराष्ट्र के निर्माताओं में से एक हैं और जीवन के इस पड़ाव पर उनका राजनीतिक अपमान राज्य में स्वीकार्य नहीं होगा।

मौजूदा राजनीतिक हालात को लेकर पवार चाहे जो भी राय रखते हों, वह अपने समर्थकों की मजबूरियों से वाकिफ हैं। जितेंद्र आव्हाड और रोहित पवार समेत उनकी पार्टी के कई

विधायकों और सांसदों के निर्वाचन क्षेत्रों में अल्पसंख्यक आबादी काफी अधिक है। वे भाजपा के सामने झुककर इस सद्भावना को खोना नहीं चाहते। पार्टी के दलित समर्थकों के लिए भी इस कदम का समर्थन करना मुश्किल होगा। इन वर्गों के नेता ही विरोध कर रहे हैं, जबकि बड़ी संख्या में लोग तर्क दे रहे हैं कि इंडिया गठबंधन में रहने के बजाय राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का हिस्सा बनना बेहतर है। हमेशा की तरह चतुराई से शरद पवार दोनों वर्गों को खुश रख रहे हैं।

जनवरी में अजित पवार की अचानक मृत्यु हो जाने के बाद, विलय का मुद्दा सामने आया। इस दुर्घटना के बाद राकांपा के अजित गुट के विकास और प्रगति के लिए कोई स्पष्ट दिशा नहीं बची। उनकी पत्नी सुनेत्रा, जिन्हें गुट का अध्यक्ष घोषित किया गया है, और उनके चंचल स्वभाव वाले बेटे पार्थ पवार खुद को गुट का संरक्षक मानते हैं।

हालांकि, कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल और नेता सुनील तटकरे ने कुछ दिन पहले

कहा था कि अजित पवार की मृत्यु से पैदा हुए ‘शून्य’ को भरना आसान नहीं है और पार्थ पवार द्वारा उठाए गए कुछ कदमों पर नाराजगी के मद्देनजर ‘सुधारात्मक उपाय’ करने की आवश्यकता है। गुट तोड़ना मुश्किल होता है, खासकर जब सत्ता और नियंत्रण के मुद्दे भी इसमें शामिल हों।

फिलहाल शरद पवार सिर्फ देख रहे हैं और चुपचाप बैठे हैं। अगर वह विलय करवाकर दोनों गुटों को राजग में शामिल कर लें तो सभी के लिए बहुत आसानी होगी। लेकिन भाजपा के अधीन रहना पवार की छवि को काफी कमजोर कर देगा। शिवसेना की छवि तो पहले ही धूमिल हो चुकी है। पवार अपनी बची-खुची राजनीतिक साख भाजपा को सौंपना नहीं चाहते।

89 वर्ष की आयु में शरद पवार एक परिपक्व लेकिन उम्रदराज कलाबाज की तरह हैं, जो यह आकलन कर रहे हैं कि क्या वह ‘इंडिया’ गठबंधन के सुरक्षित ठिकाने से राजग में छलांग लगाने पर भी सफल हो पाएंगे। क्या इस बड़े विश्वासघात को एक रणनीतिक चाल के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है? शरद पवार के अगले कदम पर नजर रखिए।

अमेरिका-ईरान अविश्वास से फिर संकट में होर्मुज जलडमरूमध्य

देवेश त्रिपाठी

अमेरिका और ईरान के बीच बड़ी मुश्किल से हुआ युद्धविराम जिस तेजी से अविश्वास और जवाबी हमलों के बोझ तले दरकता दिख रहा है, उसने यह स्पष्ट कर दिया है कि सिर्फ युद्ध रोक देने भर से शांति स्थापित नहीं होती। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने राष्ट्रपति ट्रंप और उनके ईरानी समकक्ष के बीच हुए एक शुरुआती युद्धविराम समझौते की व्याख्या को लेकर तभी से मतभेद थे। तेहरान का दावा था कि समझौते से उसे होर्मुज पर अधिक नियंत्रण का अधिकार मिला है, जबकि अमेरिका लगातार इसे सभी जहाजों के लिए खुला रखने की बात करता रहा है। समझौते में इस अस्पष्टता पर शुरुआत से ही जताई जा रही आशंकाएं अब खुलकर सामने आ रही हैं।

पिछले कुछ दिनों में अमेरिका और ईरान के बीच जवाबी हमलों के संदर्भ में सर्वाधिक चिंता की बात यह है कि दोनों पक्ष पीछे हटने का कोई संकेत नहीं दे रहे हैं, जिससे पूरा क्षेत्र पहले से कहीं अधिक तेजी से अर्निश्वतता की ओर बढ़ रहा है। समुद्री डाटा फर्म केप्लर के अनुसार, होर्मुज से रोजाना होने वाले जहाजों का आवागमन, जो अमूमन दुनिया के तेल का पांचवां हिस्सा ले जाता है, अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। आंकड़ों के अनुसार, युद्ध से पहले यहां से रोजाना 130 से अधिक जहाज गुजरते थे, लेकिन रविवार को सिर्फ 14 जहाज ही यहां से गुजरे।

जिस तरह से ओमान तट के पास एक मालवाहक जहाज को निशाना बनाया गया, वह दिखाता है कि पिछले कुछ हफ्तों में वाणिज्यिक जहाजों को होर्मुज से गुजरने को लेकर सुरक्षा का जो



भरोसा मिला था, वह अब खत्म हो चुका है। हाल के दिनों में ईरान के भीतर के कट्टरपंथी नेता अमेरिका के प्रति अपने सख्त रुख को लेकर जिस तरह अधिक मुखर हुए हैं और अमेरिका से बदला लेने की बात कर रहे हैं, वह भी पश्चिम एशिया के माहौल के जल्द सुधरने की उम्मीदों को कम करने वाला है।

दूसरी तरफ, ट्रंप द्वारा अमेरिका को होर्मुज का संरक्षक बताते हुए इस समुद्री मार्ग की सुरक्षा के बदले शुल्क वसूलने की बात करना भी विवाद को नया आयाम देने वाला ही है। इस पूरे घटनाक्रम की सबसे बड़ी विफलता यह है कि युद्धविराम को स्थायी शांति की दिशा में बदलने के लिए जिस राजनीतिक इच्छाशक्ति और कूटनीतिक संवाद की जरूरत थी, उसका अभाव दोनों पक्षों में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। कोई भी युद्धविराम तब तक टिकाऊ नहीं हो सकता, जब तक उसके पीछे विश्वास निर्माण की ठोस प्रक्रिया न हो। अगर हर सैन्य कार्रवाई का जवाब उससे अधिक तीव्र हमले से दिया जाएगा, तो पश्चिम एशिया में संघर्ष का यह चक्र खत्म होने से रहा।

गौरवपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्यों का साझा करने का अवसर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

राजस्थान विधानसभा के 75 साल पर अमृत महोत्सव का आयोजन इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि दुनिया में हमारे देश को लोकतंत्र की जड़ें सबसे गहरी होने के साथ ही आज भी लोकतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से भारत दुनिया के देशों के सामने एक मिसाल है। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल से जिस तरह से 15 जुलाई, 2026 को आयोजित अमृत महोत्सव के कार्यक्रम में विधानसभा के नए पुराने सदस्यों को एक साझा मंच उपलब्ध कराने और एक दूसरे के अनुभवों को साझा करने का बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराया है वहीं उच्च सदन के सभापति उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम में उद्घाटन सत्र और समापन सत्र में सहभागी बनाकर कार्यक्रम को और अधिक गरिमामय बनाया है। अमृत महोत्सव में राजस्थान विधानसभा के 410 नए पुराने सदस्यों ने हिस्सा लिया वहीं 6 बार या इससे अधिक समय तक सदस्य रहे सम्माननीयों का सम्मान कर लोकतांत्रिक मूल्यों का ही स्वागत सम्मान किया गया है।

आज जिस तरह से विधायिका की कम बैठकों, सत्रों के दौरान हंगामे के हालात और मतभेद और मनभेद के हालातों में राजस्थान विधानसभा का अमृत महोत्सव केवल एक आयोजन ना होकर नए विधायकों के लिए प्रेरणास्पद भी हो गया है। अमृत महोत्सव के दौरान राजस्थान में सामाजिक राजनीतिक परिवर्तनकारी 24 कानूनों पर चर्चा भी की गई तो नए पुराने सदस्यों के अनुभवों को साझा करने का भी बेहतरीन अवसर प्राप्त हो सका है। कार्यक्रम के दौरान उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन का रिमार्कैवल प्रतिक्रिया दी कि चुनाव भले ही वोट के आधार पर जीते जाते हैं पर जनता का दिल तो लोकहितकारी कार्य करके ही जीता जा सकता है। संवैधानिक संस्थाओं की शक्ति गरिमा बनाये रखने में हैं वहीं बहस की गुणवत्ता, गंभीरता और सदन में आचरण की मर्यादा से ही संवैधानिक संस्थाएं मजबूत होती है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला राजस्थान विधानसभा के भी सदस्य रह चुके हैं और उनका मानना रहा कि विधानसभा उनके लिए संस्कारों की पाठशाला रही है।



पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा कि दुश्मनी जमकर करों पर खिड़की भी खुली रखें। इंसानियत राजनीति की लक्ष्मण रेखा से बड़ी होनी चाहिए। उन्होंने स्व. भैरोसिंह शेखावत और स्व. मोहन लाल सुखाड़िया व स्व. भैरोसिंह शेखावत व स्व. हरदेव जोशी के बीच सदन और सदन के बाहर के संबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि संबंधों की लक्ष्मण रेखा को नहीं लांघा जाना चाहिए। मतभेद भले ही हो पर मनभेद नहीं होना चाहिए। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल पर आयोजित अमृत महोत्सव में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, प्रतिपक्ष नेता टीकाराम जूली सहित पक्ष विपक्ष के नेताओं ने खुलकर विचार रखते हुए विधायिका की कम बैठकों पर गंभीर चिंता व्यक्त की।

राजस्थान विधानसभा का अमृत महोत्सव इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि सामान्यतः इस तरह के कार्यक्रम मात्र औपचारिकता बन कर रह जाते हैं पर जिस तरह से अमृत महोत्सव को लोकतंत्र के लिए उपादेय, लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना, सत्र के दौरान बहस के स्तर की गंभीरता, दलगत राजनीति से उठकर साझा मंच पर खुली चर्चा और अनुभवों का साझा करने से यह आयोजन विशिष्ट आयोजन हो जाता है। जिस तरह से सत्रों के दौरान हंगामे के हालात बनते हैं और आपसी मतभेद और मनभेद की स्थितियां होने लगी है इस पर चिंता व्यक्त करने के साथ ही विधानसभा के पहले के सत्रों में गंभीरता, तथ्यात्मकता, गहन अध्ययन और स्तरीय बहसों के उदाहरण उद्भूत करते हुए गंभीर और स्तरीय बहस पर जोर दिया गया। यहां तक

कहा गया कि हंगामे से नहीं तथ्य और तर्क व संवाद से बड़े नेता बनते हैं। लोकतंत्र की लक्ष्मण रेखा से इंसानियत की भावना पर जोर दिया गया।

अमृत महोत्सव के बहाने जिस तरह से सदनों में बहस के दौरान पक्ष-विपक्ष के सदस्यों द्वारा गरिमापूर्ण, गंभीरता परक, गहन अध्ययन, आलोचना के लिए आलोचना ना होने, तथ्यपरक पक्ष रखने और गंभीर बहस से सदन की गरिमा ही बढ़ेगी और इसका लाभ लोकतांत्रिक मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ करने में मिल सकेगा। अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का यह कहना कि अनुभव और युवा उर्जा का समगमन ही लोकतंत्र की असली पूंजी है। देखा जाए तो राजस्थान विधानसभा के अमृत उत्सव का यह आयोजन जहां लोकतंत्र की मजबूती, लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ ही लोकतंत्र में अटूट आस्था, गौरवशाली लोकतांत्रिक आस्था का माध्यम बन गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का यह निकश की यह आयोजन अतीत का उत्सव ही नहीं अपितु भविष्य का पथ-प्रदर्शक भी है। राजस्थान विधानसभा के इस अमृत महोत्सव पर जिस तरह से सत्रों के दौरान बहस को स्तरीय बनाने, हंगामे की भेंट नहीं चढ़ाने, गहन अध्ययन और तर्क आधारित बहस और पूरी तैयारी के साथ सदन में हिस्सा लेने पर जिस तरह का एक स्वर में संदेश दिया गया है और जिस तरह से विचारधारा और प्रतिबद्धता भिन्न होने के बावजूद मानवीय संबंधों को बनाये रखने यानी की मतभेद के बावजूद मनभेद नहीं रखने का गंभीर व संदेश दिया गया है। अमृत महोत्सव में अभी चार कार्यक्रम और होने हैं और कार्यक्रमों पर आमजन की निगाहें इस मायने में हैं कि सदन की गरिमा और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ ही अमानागरिकों केन्द्र में होना चाहिए। आयोजन के लिए साधुवाद इस अर्थ में महत्वपूर्ण हो जाता है कि नए सदस्यों को गरिमापूर्ण इतिहास से रूबरू होने के साथ ही वरिष्ठों के अनुभवों को भी साझा और आत्मसात करने का अवसर मिल रहा है। सही मायने में विधायी परंपरा को समझने, संसदीय मर्यादाओं, लोकतांत्रिक मूल्यों पर अनुभवों को साझा करने का अवसर मिला है।

लाला लाजपत राय और पंजाब का राष्ट्रीय संघर्ष

तरुण विजय

पंजाब कभी स्वतंत्रता संग्राम और बौद्धिक उत्कृष्टता में पूरे भारत का नेतृत्व करता था, भारतवर्ष के स्वातंत्र्य संग्राम के तीन महापुरुष थे-लाला, बाल और पाल। पंजाब के लाला लाजपत राय, महाराष्ट्र के बाळगंगाधर तिलक और बंगाल के बिपिन चन्द्र पाल। तीनों कट्टर सनातनी थे और उनके अनुयायी सर्वसमाज में थे। पंजाब ने क्रांतिकारियों की प्रसिद्ध तिकड़ी प्रदान की-भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव। किसी ने उनको सिख-हिन्दू में बांट कर नहीं देखा, तब शब्द भी केशधारी और मोने चलते थे। पंजाब देश के साहित्य, संगीत, कला, भारत भक्ति का सर्वोच्च केंद्र था। लाला लाजपत राय से लाला जगतनारायण तक, पंजाब ने अनेक महापुरुषों को जन्मा, उनका वंदन किया।

स्वामी रामतीर्थ पंजाब से थे, स्वामी श्रद्धानन्द जी पंजाब से थे, महर्षि दयानन्द का सर्वाधिक प्रचार पंजाब में हुआ, पूरा बॉलीवुड एक समय पंजाबी था-पृथ्वीराज कपूर से लेकर पूरा कपूर खानदान, देवानंद, दिलीप कुमार, सिमी, अनेक निर्देशक और अभिनेत्रियां। पृथ्वीराज कपूर की हर फिल्म भगवान शिव को जल चढ़ाते हुए शुरू होती थी। हरिमंदिर साखब में बाबा श्रीचंद जी की धूनी साखब की अलख जलती रहती थी, वहां राम, कुम्हार, दुर्गा की प्रतिमाएं थीं। यह सब अभी कल की ही बात है।

फिर ब्रिटिश दुरभिसंधि और पाकिस्तान की आई.एस.आई. के खिलौने खालिस्तानियों का ऐसा समय आया कि अटल बिहारी वाजपेयी को कहना पड़ा-दूध में दरार पड़ गई। जैसे हम सभी गुरु साहिबानों के अमर साहिबजादों के बारे में पढ़ते हैं, हम हमेशा पच्चे गुरु नानक देव जी के दोनों सुपुत्रों के बारे में पढ़ते थे-एक बाबा लखमीचंद जी, दूसरे बाबा श्रीचंद जी। लखमीचंद जी व्यापारी हो गए, श्रीचंद जी शिव जी के अवतार बैरागी अवभूत साधु हो गए, जिनकी आज भी घर-घर में पूजा होती है। पंजाब में अब कौन कहेगा कि हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे, पूरे अविभाजित पंजाब के एकमात्र सर्वमान्य नेता थे, उनको किसी ने हिन्दू केसरी या



दिया। वे दिन, जब बसों से उतार-उतार कर हिन्दुओं को गोली मारी जाती थी, सिख घरों पर खालिस्तानियों के जबरन कब्जे और मां-बेटियों से अत्याचार, गुरुद्वारों में खालिस्तानी अलगाववादी दहशतगर्दों की बेअदबी, स्कूल अध्यापकों और छात्रों को गोली मारना, यह सब पंजाब का पुराना इतिहास नहीं, अभी का है, जिसको भूलना वतन के साथ विश्वासघात होगा।

पंजाब के नेताओं को खालिस्तानी अंधेरगर्दी के समय बलिदान हुए सभी पंजाबियों की याद में अमृतसर, जालंधर, चंडीगढ़ में एक विराट शांति स्मारक बनाकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए, जो अपने रक्त संबंधियों को भूल जाए, जो अपनेपतेवा भूल जाए, जो पंजाब बचाने की सांझी लड़ाई और शहादत भूल जाए उसको भगवान भी नहीं बचा सकता। देश और गांधियां कायर, डरपोक, निर्णयहीन सत्तापिपासुओं से नहीं बचता। पंजाब भूल गया कि भगत सिंह बनने के लिए भारत को प्रथम आराध्य मानना होता है, क्रांतिकारी भारत के लिए बलिदान हुए थे, न कि किसी मजहब के लिए।

पंजाब भूल गया कि डर और भय के कारण जलियांवाला बाग में गोली चलाने वाले डूझहदुस्तानी थे, पंजाब भूल गया कि देश और धर्म के लिए गुरुओं की शहादत का अपमान करने वाले आई.एस.आई. के एजेंट खालिस्तानी तत्वों ने पंजाब को सबसे ज्यादा लहूलुहान किया, सिख बेटियों की इज्जत लूटी, विदेशी देशद्रोहियों का साथ दिया। जिन लोगों ने जान पर खेल कर पंजाब बचाया उनमें पंजाब पुलिस और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं। पंजाब पुलिस ने जान भी दी और गांधियां भी खाईं। उसको राक्षस दिखने वाली फिल्में बनाते हैं। तो वे अपनी सुरक्षा से पंजाब पुलिस क्यों नहीं हटा देते? मेरा सुझाव है कि पंजाब पुलिस द्वारा आतंकवादियों के विरुद्ध लड़े युद्ध के सम्मानार्थउनके एक जत्थे को गणतंत्र दिवस की परेड में शामिल करना चाहिए।

राकांपा के राजनीतिक भविष्य की अटकलें

राहिल नोरा चोपड़ा

शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) का राजनीतिक भविष्य तब चर्चा में आ गया जब राकांपा के दोनों गुटों के वरिष्ठ नेताओं ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ अलग-अलग बैठकें कीं, जिससे संभावित राजनीतिक पुनर्गठन की नई अटकलें तेज हो गई हैं। सूत्रों के अनुसार, शरद पवार अगले परिसीमन अभ्यास को संचालित करने के लिए नरेंद्र मोदी सरकार के विवादास्पद विधेयक का समर्थन करने के लिए तैयार हैं। यदि पुष्टि हो जाती है, तो यह कदम विपक्ष के संयुक्त रुख से एक अलग राह होगा। इस बीच, राकांपा (शरद पवार) सांसद सुप्रिया सुले ने अटकलों की पुष्टि करने से इंकार कर दिया लेकिन संकेत दिया कि विधेयक पर गुट का रुख इसके अंतिम रूप और स्वरूप पर निर्भर करेगा। सरकार 20 जुलाई से शुरू होने वाले संसद के मानसून सत्र के दौरान संविधान (131वां संशोधन) विधेयक पेश करने की उम्मीद कर रही है।

कांग्रेस विधेयकों का विरोध करेगी : कांग्रेस संसदीय रणनीति समूह ने पार्टी की रणनीति पर चर्चा करने के लिए सी.पी.पी. अध्यक्ष सोनिया गांधी के साथ एक रणनीतिक बैठक की और पार्टी मानसून सत्र के दौरान संसद में राम मंदिर दान चोरी, इथेनॉल-मिश्रित ईंधन, प्रश्न पत्र लीक, बढ़ती तेल कीमतें और भारत-अमरीका व्यापार सौदे जैसे मुद्दों को उठाएगी। पार्टी ने यह भी घोषणा की कि वह परिसीमन और मंत्रियों व मुख्यमंत्रियों को हटाने पर प्रस्तावित संविधान संशोधन विधेयकों, साथ ही सत्र के दौरान पेश किए जाने वाले कई अन्य कानूनों का कड़ा विरोध करेगी। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे और अन्य वरिष्ठ सांसदों ने कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में भाग लिया। बैठक के बाद कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि पार्टी का शीर्ष नेतृत्व उन दलों के साथ समन्वय कर रहा है जिन्होंने 17 अप्रैल को लोकसभा में संविधान (130वां संशोधन) विधेयक को हारने के लिए एक साथ मतदान किया था। इंडिया गुट 20 जुलाई को एक संयुक्त रणनीति बैठक आयोजित करने वाला है, जबकि सरकार ने 19 जुलाई को सर्वदलीय बैठक बुलाई है।

ममता को झटके पर झटका: तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) में बढ़ते दलबदल के बीच, पार्टी सुप्रियो ममता बनर्जी ने पार्टी छोड़ने की योजना बना रहे नेताओं से

कहा कि वे 21 जुलाई की शहीद दिवस रैली से पहले ऐसा कर लें, प्रस्थान से संगठन किसी भी तरह से कमजोर नहीं होगा। दूसरी ओर, जानी-मानी अभिनेत्री कोयल मल्लिक ने राज्यसभा से इस्तीफा दे दिया, जिससे तृणमूल कांग्रेस की संसदीय ताकत को एक और झटका लगा। इसके तुरंत बाद, कोयल ने दिल्ली में केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव से उनके आवास पर मुलाकात की, जिससे उनके अगले कदम को लेकर अटकलें तेज हो गईं। यह मोड़ तब आया है जब ममता के विश्वसनीय सहयोगी और वरिष्ठ तृणमूल विधायक मदन मित्रा, त्नाब्रत बनर्जी के नेतृत्व वाले विद्रोही तृणमूल खेमे में शामिल हो गए। इस बीच, ममता बनर्जी ने स्पष्ट कर दिया है कि वह अपनी राजनीतिक पारी समाप्त करने से कौसों दूर हैं, ‘कारबो, लोरबो, बचबो’ (मैं लड़ूंगी और जीवित रहूंगी)।

पंजाब में चन्नी खेमे की मांगें बरकरार : पंजाब कांग्रेस में गंभीर और मजबूत गुटীয় कलह के बीच, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने पंजाब के पूर्व सी.एम. चरणजीत सिंह चन्नी से मुलाकात नहीं की। जबकि कांग्रेस महासचिव (संगठन) के.सी. वेणुगोपाल ने चन्नी, सुखजिंदर रंधावा, राणा गुरजीत सिंह, विजय इंदर सिंगला और परगत सिंह से अलग-अलग मुलाकात की। हालांकि, राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और पंजाब के प्रभारी कांग्रेस महासचिव भूपेश बघेल इस चिंता में हैं कि दबाव में पंजाब कांग्रेस प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वड्डूखड़ा को बदलने से गलत संदेश जाएगा। नेतृत्व यह भी समझ रहा है कि राज्य इकाई के भीतर मौजूदा जातीय संतुलन को ध्यान में रखा जाए, जिसमें वड्डूखड़ा गुट सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं और चन्नी एक प्रमुख दलित चेहरा हैं। इस बीच, चन्नी और रंधावा ने बावजूद का झंडा बुलंद कर दिया है और इन संकेतों के बावजूद कि पार्टी नेतृत्व राज्य इकाई प्रमुख में बदलाव पर विचार नहीं कर रहा है, चन्नी खेमे ने अपनी मांगें जारी रखीं, जिससे पंजाब कांग्रेस के भीतर व्यापक दरा को लेकर अटकलें तेज हो गईं।

कांग्रेस ने भी प्रधान के इस्तीफे की मांग: सोनम वांगचुक की भूख हड़ताल पर अपनी चुप्पी तोड़ते हुए, कांग्रेस ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की है। कांग्रेस सांसद और वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने शुक्रवार को वांगचुक से मुलाकात की और असंवेदनशील केंद्र सरकार पर लोकतांत्रिक विरोध की भाषा को न समझने का आरोप लगाया।

जानें महाभारत में छुपे इस अदभूत रहस्य को



महाभारत और रामायण में कई रहस्य छुपे हुए हैं। युधिष्ठिर के राज में प्रजा को किसी भी चीज की कोई कमी नहीं थी। किंवदंतियों की मान्यता अनुसार कि एक दिन देवऋषि नारद मुनि महाराज युधिष्ठिर के समक्ष प्रकट हुए और कहने लगे कि आप सभी पांडव यहां प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं, लेकिन वहां स्वर्गलोक में आपके पिता बहुत दुखी हैं। देवऋषि के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने इसका कारण पूछा, तो देवऋषि ने कहा, ‘वे अपने जिंदा रहते हुए राजसूय यज्ञ करवाना चाहते थे लेकिन ऐसा वे कर नहीं सके इसलिए दुखी हैं।

महाभारत और रामायण में कई रहस्य छुपे हुए हैं। ऐसा ही एक रहस्य है महाभारत में। यह उस समय की बात है, जब युद्ध में पांडवों ने कौरवों पर विजयश्री प्राप्त कर ली थी और पांडव हस्तिनापुर में सुखपूर्वक जीवन गुजार रहे थे। युधिष्ठिर के राज में प्रजा को किसी भी चीज की कोई कमी नहीं थी। किंवदंतियों की मान्यता अनुसार कि एक दिन देवऋषि नारद मुनि महाराज युधिष्ठिर के समक्ष प्रकट हुए और कहने लगे कि आप सभी पांडव यहां प्रसन्नतापूर्वक रह रहे हैं, लेकिन वहां स्वर्गलोक में आपके पिता बहुत दुखी हैं।

देवऋषि के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने इसका कारण पूछा, तो देवऋषि ने कहा, ‘वे अपने जिंदा रहते हुए राजसूय यज्ञ करवाना चाहते थे लेकिन ऐसा वे कर नहीं सके इसलिए दुखी हैं। महाराज युधिष्ठिर आपको आपके पिता की आत्मा की शांति के लिए यह यज्ञ करवाना चाहिए।’ नारदजी के ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने अपने पिता की आत्मा शांति के लिए राजसूय

यज्ञ करने की घोषणा की। इसके लिए उन्होंने नारदजी के परामर्श पर भगवान शिव के परम भक्त ऋषि पुरुष मृगा को आमंत्रित करने का फैसला लिया। ऋषि पुरुष मृगा जन्म से आधे पुरुष शरीर के तथा नीचे से उनका पैर मृग का था, लेकिन वे कहां रहते थे यह किसी को पता नहीं था।

किंवदंति अनुसार ऐसे में युधिष्ठिर ने उन्हें ढूंढकर यज्ञ में आमंत्रित करने के लिए भीम को इसकी जिम्मेदारी सौंपी। भीम अपने बड़े भ्राता की आज्ञा का पालन करते हुए ऋषि पुरुष मृगा को खोजने निकल पड़े। खोजते-खोजते वे घने जंगलों में पहुंच गए। जंगल में चलते वक्त भीम को मार्ग में हनुमानजी दिखाई दिए जिन्होंने भीम के घमंड को चूर किया। यह कथा तो आपको मालूम ही है। भीम भी पवनपुत्र हैं, इस नाते भीम हनुमानजी के भाई हुए। भीम ने लेटे हुए हनुमानजी को बंदर समझकर उनसे अपनी पूंछ हटाने के लिए कहा। तब बंदर ने चुनौती देते हुए कहा कि अगर वह उसकी पूंछ हटा सकता है तो हटा

दे, लेकिन भीम उनकी पूंछ हिला भी नहीं पाए। तब जाकर उन्हें एहसास हुआ कि यह कोई साधारण बंदर नहीं है। यह बंदर और कोई नहीं, बल्कि हनुमानजी थे। भीम ने यह जानकर हनुमानजी से क्षमा मांगी। भीम ने हनुमानजी को अपने जंगल में भटकने का उद्देश्य बताया। कुछ विचार करने के बाद हनुमानजी ने भीम को अपने शरीर के 3 बाल दिए और कहा कि इन्हें अपने पास रखो संकट के समय में ये तुम्हारे काम आएंगे।

भीम ने हनुमानजी के वे 3 बाल अपने पास सुरक्षित रख लिए और चल पड़े ऋषि मृगा को ढूंढने। कुछ दूर जाने के बाद ही भीम को भगवान शिव के परम भक्त पुरुष मृगा मिल गए, जो महादेव शिव की स्तुति कर रहे थे। भीम ने उनके पास जाकर उन्हें प्रणाम किया तथा अपने आने का प्रयोजन बताया। इस पर ऋषि पुरुष मृगा भी उनके साथ चलने को राजी हो गए, लेकिन उन्होंने एक शर्त रख दी। पुरुष मृगा ने यह शर्त रखी कि तुम्हें मुझसे पहले हस्तिनापुर पहुंचना होगा, नहीं तो मैं तुम्हें खा

जाऊंगा। भीम ने थोड़ी देर विचार करने के बाद ऋषि पुरुष मृगा की शर्त स्वीकार कर ली। शर्त स्वीकार करने के बाद वे अपनी पूरी शक्ति के साथ हस्तिनापुर की ओर दौड़ने लगे। बहुत दूर तक भागते-भागते भीम ने जब पीछे की ओर यह जानने के लिए देखा कि ऋषि पुरुष मृगा कितने पीछे रह गए हैं तो उन्होंने पाया कि ऋषि तो बस उन्हें पकड़ने ही वाले हैं। यह देख भीम चौंक गए और घबराकर अपनी पूरी शक्ति के साथ शीघ्रता से भागने लगे। लेकिन हर बार पीछे देखने पर उन्हें ऋषि मृगा उनके बिलकुल पास नजर आते थे।

भागते-भागते तभी भीम को हनुमानजी के दिए उन 3 बालों की याद आ गई। हनुमानजी ने कहा था कि संकट काल में ये तुम्हारे काम आएंगे। भीम ने उनमें से एक बाल दौड़ते-दौड़ते जमीन पर फेंक दिया। वह बाल जमीन में गिरते ही लाखों शिवलिंगों में परिवर्तित हो गया। भगवान शिव के परम भक्त होने के कारण ऋषि पुरुष मृगा मार्ग में आए प्रत्येक शिवलिंग को प्रणाम करते हुए आगे बढ़ने लगे। इसके चलते भीम को दूर तक भागने का मौका मिल गया। कुंती पुत्र भीम लगातार भागते रहे। फिर जब भीम को लगा कि ऋषि अब फिर से उन्हें पकड़ ही लेंगे तो उन्होंने फिर से एक बाल गिरा दिया और वह बाल भी बहुत से शिवलिंगों में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार से भीम ने ऐसा 3 बार किया।

अंत में जब भीम हस्तिनापुर के द्वार में घुसने ही वाले थे कि ऋषि पुरुष मृगा उन्हें पकड़ने के लिए दौड़े और उन्हें पकड़ ही लिया था कि तभी भीम ने छलांग लगाई और उनका बस पैर ही द्वार के बाहर रह गया था। इस पर पुरुष मृगा ने उन्हें पकड़ते हुए खाना चाहा,लेकिन उसी दौरान भगवान कृष्ण और युधिष्ठिर द्वार पर पहुंच गए। दोनों को देखकर युधिष्ठिर ने भी पुरुष मृगा से बहस करनी शुरू कर दी। तब युधिष्ठिर से पुरुष मृगा ने कहा कि शर्त अनुसार इसका पैर द्वार के बाहर ही था अतः यह पहुंच नहीं पाया। ऐसे में मैं इसे खाऊंगा। फिर भी हे धर्मराज तुम न्याय करने के लिए स्वतंत्र हो। ऐसे वचन सुनकर युधिष्ठिर ने ऋषि पुरुष मृगा से कहा कि भीम के केवल पैर ही द्वार के बाहर रह गए थे, बाकी संपूर्ण शरीर तो द्वार के अंदर ही है अतः आप भीम के केवल पैर ही खा सकते हैं।

ऐसा सुनकर युधिष्ठिर के न्याय से ऋषि पुरुष मृगा प्रसन्न हुए तथा उन्होंने भीम को जीवनदान दे दिया। इसके बाद ऋषि ने यज्ञ संपन्न करवाया और सबको आशीर्वाद भी दिया।

क्यों, माता आद्या शक्ति की पूजा मनोकामना पूर्ण दायक होती है

सृष्टि के संचालन हेतु, भगवान विष्णु पालनहार, ब्रहमा रचनाकार, तथा शिव संहारक हुए। क्रमशः तीनो महा देव, तीन प्राकृतिक गुणों के कारक बने, सत्व गुण, रजो गुण तथा तमो गुण, संपूर्ण ब्रहमाण्ड का संचालन इन्हीं गुणों के द्वारा ही होता हैं, परन्तु इन कार्यों में इच्छा शक्ति, माता आदि शक्ति की ही होती हैं। इनकी पूजा मनोकामना पूर्ण दायक होती है ।

त्रि-देवो के अनुसार इन की, जीवन संगिनी भी इन कार्यों में संलग्न रहती हैं। त्रि-देवियाँ या महा-देवियाँ, महा लक्ष्मी, महा सरस्वती तथा महा काली के रूप में, त्रि-देवो की जीवन संगिनी तथा सहायक हैं। महा लक्ष्मी के रूप में ये भगवान विष्णु कि सात्विक शक्ति हैं, महा सरस्वती के रूप में ये ब्रहमा जी की राजसिक शक्ति हैं तथा सती अथवा पार्वती के रूप में ये शिव के तामसी शक्ति हैं। काली कुल की देवियाँ प्राय, घोर भयानक स्वरूप तथा उग्र स्वाभाव वाली होती हैं तथा इन का सम्बन्ध काले रंग से होता

हैं, इस के विपरीत श्री कुल के देवियाँ सौम्य तथा कोमल स्वाभाव की तथा लाल रंग से सम्बन्धित होती हैं। महा कालीशमशान के भयानक वातावरण में, शिव की छाती पर पैर रख मन रहने वाली, भयानक, घोर-रूपा शक्ति “महा काली” के नाम से जानी जाती

हैं। आदि काल में, जब कुछ भी व्याप्त नहीं था, केवल चारो ओर अंधकार ही अंधकार दृष्टि-गोचर होता था, व्यास अंधकार से एक शक्ति



हिन्दू शास्त्रों के अनुसार, आद्या शक्ति माँ, भगवान् विष्णु के अन्तः कारण की शक्ति हैं, योगमाया शक्ति हैं, तथा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से संपूर्ण ब्रहमाण्ड के उत्पत्ति के कारक हैं। भगवान ब्रहमा और शिव, की उत्पत्ति भी इन्हीं के अनुसार ही हुई हैं।

को उत्पन्न किया हैं तथा सभी को अपने कर्मों का फल प्रदान

उत्पन्न हुई, जिस का नाम काली पडा। अंधकार से जन्मा होने के परिणाम स्वरूप, ये शक्ति तमोगुणी तथा काले वर्ण वाली हैं। वे दिव्य स्वरूप वाली, हजारों चन्द्रमा के किरणों से प्रतिबिंबित कांति वाली प्रतीत होती हैं। इन्हीं की इच्छा शक्ति ने इस संपूर्ण चराचर जगत

करने वाली हैं। प्रलय काल में ये स्वयं महाकाल का भी भक्षण करने में समर्थ हैं। भगवान विष्णु के योग निमग्न रहते हुए, उदित होने वाली तामसी शक्ति, स्वयं आद्या शक्ति हैं जो संहारक हैं तथा महा माया काली के नाम से विख्यात हैं।

यह षडक्षर मंत्र सभी दुख दूर करने वाला मंत्र माना गया है

शिव का रूप : शिव यक्ष के रूप को धारण करते हैं और लंबी-लंबी खूबसूरत जिनकी जटाएँ हैं, जिनके हाथ में ‘पिनाक’ धनुष है, जो सत् स्वरूप हैं अर्थात् सनातन हैं, यकार स्वरूप दिव्यगुणसम्पन्न उज्ज्वलस्वरूप होते हुए भी जो दिगम्बर हैं। जो शिव नागराज वासुकि का हार पहने हुए हैं, वेद जिनकी बाह रूद्रों में गणना करते हैं, पुराण उन्हें शंकर और महेश कहते हैं उन शिव का रूप विचित्र है। अर्धनग्न शरीर पर राख या भभूत मले, जटाधारी, गले में रुद्राक्ष और सर्प लपेटे, तांडव नृत्य करते हैं तथा नंदी जिनके साथ रहता है। उनकी भृकुटि के मध्य में तीसरा नेत्र है। वे सदा शांत और ध्यानमग्न रहते हैं। इनके जन्म का अता-पता नहीं हैं। वे स्वयंभू माने गए हैं।

भगवान शिव का मंत्र
“ॐ नम शिवाय” यह षडक्षर मंत्र सभी दुख दूर करने वाला मंत्र माना गया है। ‘ॐ’ भगवान शिव का एकाक्षर मंत्र हैं। ‘नम शिवाय’ भगवान शिव का पंचाक्षरी मंत्र है। शिवपुराण के अनुसार भगवान शिव के दो विवाह हुए। दोनों ही बार उनका विवाह भगवती के अवतारों से हुआ। पहला राजा दक्ष की पुत्री सती के साथ और दूसरा हिमालय पुत्री देवी पार्वती के साथ। शिवजी के दो पुत्र माने गए हैं कार्तिकेय और भगवान गणेश। कई जगह शिवांशों यानि शिव के अंशो का वर्णन किया गया जिनमें अंधक नामक शिवांश सबसे प्रमुख हैं।

शिव महिमा : शिव ने कालकूट नामक विष पिया था जो अमृत मंथन के दौरान निकला था। शिव ने भस्मासुर को जो वरदान दिया था उसके जाल में वे खुद ही फँस गए थे। शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया था। शिव ने दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दिया था। ब्रहमा द्वारा छल किए जाने पर शिव ने ब्रहमा को शापित कर विष्णु को वरदान दिया था। शिव की महिमा का वर्णन पुराणों में मिलता है।

शिव के प्रमुख नाम : शिव के वैसे तो अनेक नाम हैं जिनमें 108 नामों का उल्लेख पुराणों में मिलता है लेकिन यहाँ प्रचलित नाम जैन- महेश, नीलकंठ, महादेव, महाकाल, शंकर, पशुपतिनाथ, गंगाधर, नटराज, त्रिनेत्र, भोलेनाथ, आदिदेव, आदिनाथ, त्रिायंबक, त्रिलोके श, जटाशंकर, जगदीश, प्रलयंकर, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, हर, शिवशंभु, भूतनाथ और रुद्र।

शिवलिंग : विश्व कल्याण के लिए भगवान शिव संसार में शिवलिंग के रूप में विद्यमान हैं। भारत में कई जगह शिवलिंग पाए जाते हैं। भारत में बाहर अहम ज्योतिर्लिंग हैं जहां भोलेनाथ शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं।

ज्योतिर्लिंग : ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति के संबंध में अनेकों मान्यताएँ प्रचलित हैं। ज्योतिर्लिंग यानी ‘व्यापक



“ॐ नम शिवाय” यह षडक्षर मंत्र सभी दुख दूर करने वाला मंत्र माना गया है। ‘ ॐ ’ भगवान शिव का एकाक्षर मंत्र हैं। ‘नम शिवाय’ भगवान शिव का पंचाक्षरी मंत्र है। भगवान शिव को आदि देव माना जाता है। हिन्दू मान्यतानुसार भगवान शिव संहार करने वाले माने जाते हैं। जो इस संसार में आता है उसे जाना भी होता है और भगवान शिव इसी कार्य के कर्ता माने जाते हैं। शिव है धर्म की जड़। शिव से ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है।

ब्रह्मात्मलिंग’ जिसका अर्थ है ‘व्यापक प्रकाश’। जो शिवलिंग के बारह खंड हैं। शिवपुराण के अनुसार ब्रह्म, माया, जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का उल्लेख पुराणों में मिलता है लेकिन यहाँ प्रचलित नाम जैन- महेश, नीलकंठ, महादेव, महाकाल, शंकर, पशुपतिनाथ, गंगाधर, नटराज, त्रिनेत्र, भोलेनाथ, आदिदेव, आदिनाथ, त्रिायंबक, त्रिलोके श, जटाशंकर, जगदीश, प्रलयंकर, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, हर, शिवशंभु, भूतनाथ और रुद्र।

शिव निवास : तिब्बत स्थित कैलाश पर्वत पर प्रारम्भ में उनका निवास रहा। वैज्ञानिकों के अनुसार तिब्बत धरती की सबसे प्राचीन भूमि है और पुरातनकाल में इसके चारों ओर समुद्र हुआ करता था। फिर जब समुद्र हटा तो अन्य धरती का प्रकटन हुआ। जहाँ पर शिवलिंग पाए जाते हैं। भारत में बाहर अहम ज्योतिर्लिंग हैं जहां भोलेनाथ शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं।

भगवान शिव का निवास कैलाश पर्वत पर है। लेकिन उनकी प्रिय नगरी है काशी। पुराणों के अनुसार काशी के कण-कण में शिव विराजमान हैं।

शिव की प्रिय वस्तुएं : रुद्राक्ष : भगवान शिव के आभूषणों में रुद्राक्ष का अहम महत्व है। मान्यता है कि त्रिपुरासुर नामक राक्षस के वध के बाद भगवान शिव के नेत्रों से गिरे अश्रु बिन्दुओं से वृक्ष उत्पन्न हुए और रुद्राक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुए।

भस्म : भगवान भोलेनाथ भस्मी में रमते हैं। मान्यता है कि शिवजी की पूजा भस्म के बिना पूर्ण नहीं होती।

बेलपत्र : भगवान शंकर का एक नाम भोलेनाथ भी है क्योंकि वह बहुत जल्दी किसी की भी मनोकामना पूर्ण कर देते हैं। उनकी पूजा में छत्तीस भोग नहीं लगते वह तो मात्र भांग, धतूरे और बेलपत्र के चढ़ावे से प्रसन्न हो जाते हैं।



कितनी छड़ वाली विंड चाइम्स कहां और क्यों लगाएं?

फेंगशुई भारतीय वास्तु शास्त्र का चीनी रूपांतरण है। फेंगशुई की पवन घंटी (विंड चाइम्स) सर्वाधिक चलन में है।

दरअसल विंड चाइम या पवन घंटी से जो मधुर ध्वनि निकलती है वह पूरे घर में फेंगशुई के अनुसार ची की सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाहित करती है। इसलिए घर में विंड चाइम लगाते हैं। घर या आफिस के लिए फेंगशुई में अलग-अलग प्रकार की विंड चाइम के बारे में बताया गया है तो आइये जानते है कि घर या आफिस के कौन से कमरे या स्थान के लिए किस प्रकार की विंड चाइम उपयुक्त रहेगी।

नीचे विंड चाइम्स के कुछ टिप्स दिए गए हैं, जिनसे

घर में गणेशजी की प्रतिमा बढ़ाती है धन-दौलत

शास्त्रों के अनुसार प्रथम पूज्य श्री गणेश को परिवार का देवता माना गया है। परिवार की किसी भी प्रकार की परेशानी के लिए गणेशजी की आराधना श्रेष्ठ उपाय है। वहीं वास्तु में भी श्री गणेश की प्रतिमा को वास्तुदोष दूर करने का अचूक उपाय बताया गया है। वास्तु के अनुसार घर में विघ्न विनाशक श्री गणेश की प्रतिमा रखना बहुत शुभ माना जाता है। जहां गणेशजी की प्रतिमा रहती है उस क्षेत्र में किसी भी प्रकार का वास्तुदोष सक्रीय नहीं हो पाता। साथ ही घर के आसपास भी नकारात्मक ऊर्जा भी प्रभाव नहीं दिखा पाती। इनकी प्रतिमा के शुभ प्रभाव से परिवार के सभी सदस्यों

को स्वास्थ्य लाभ मिलता है और सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। घर में श्रीगणेश की प्रतिमा कहां रखनी चाहिए? इस संबंध में वास्तु के अनुसार इनकी मूर्ति ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में लगानी चाहिए। नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिम) में श्रीगणेश की मूर्ति शुभ प्रभाव नहीं देती। घर के पूजन स्थल पर गणेशजी की बाएं हाथ की ओर सूंड वाली मूर्ति बहुत शुभ मानी जाती है। घर में जहां वास्तु दोष हो वहां सिंदूर से स्वस्तिक का चिन्ह बनाएं। साथ घर के मुख्य द्वार गणेशजी की प्रतिमा या उनका प्रतिक चिन्ह स्वस्तिक बनाएं।



गुजरात को दहलाने की बड़ी साजिश नाकाम!

नईदिल्ली। गुजरात एटीएस की जांच में जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े कथित आतंकी मांड्यूल को लेकर कई चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं. जांच एजेंसी के मुताबिक, गिरफ्तार आरोपियों ने पिछले दो वर्षों में आठ बार आईईडी बनाने और विस्फोट करने का प्रयास किया, जिनमें 2 बार विस्फोट करने में सफल भी रहे. एजेंसी का दावा है कि आरोपी भविष्य में बड़े आतंकी हमले को अंजाम देने के लिए खुद को तैयार कर रहे थे. आजतक की टीम ने ग्राउंड जीरो पर पहुंचकर पूरी पड़ताल की. गुजरात एटीएस ने प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के एक बड़े मांड्यूल का भंडाफोड़ करते हुए देश के खिलाफ रची जा रही एक बेहद खतरनाक साजिश को नाकाम कर दिया है. एटीएस ने पहले पकड़े गए 8 आतंकियों से मिली लीड के आधार पर पाटन जिले के सिद्धपुर से 5 और आतंकियों को गिरफ्तार किया है, जिसके बाद इस मांड्यूल में पकड़े गए कुल आतंकियों की संख्या 13 हो गई है।

मध्यप्रदेश में वही रहेगा जो एक शादी करेगा

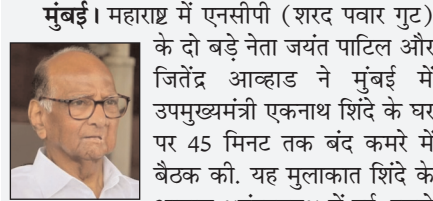
भोपाल। यूनिफॉर्म सिविल कोड को लेकर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक बार फिर बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा कि अब एक शादी करने वाले को ही कानूनन मध्य प्रदेश में रहने का अधिकार होगा. मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में जब एक देश, एक विधान, एक प्रधान और एक निशान की व्यवस्था होनी चाहिए, तो अलग-अलग समुदायों के लिए अलग-अलग कानून क्यों होने चाहिए. कुछ दिन पहले सीएम मोहन यादव ने इंदौर में एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि था अगर भगवान रामचंद्र एके शादी करते हैं, तो रहीम से भी एक ही शादी की अपेक्षा की जानी चाहिए. उन्होंने कहा कि मुस्लिम महिलाएं भी हमारी बहनें हैं और उन्हें भी समान अधिकार मिलने चाहिए. मुख्यमंत्री ने कहा कि अब एक शादी करने वाले को ही मध्य प्रदेश में कानूनन रहने का अधिकार रहेगा. उन्होंने तीन तलाक का जिक्र करते हुए कहा कि अब यदि कोई तीन तलाक जैसी बात करेगा।

आरजेडी में करीबी सिंडिकेट का संकट



पटना। बिहार के बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव की सियासी तपिश के बीच राष्ट्रीय जनता दल को तगड़ा झटका लगा है. आरजेडी के प्रवक्ता रहे मृत्युंजय तिवारी ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया. तिवारी ने तेजस्वी यादव के करीबी नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा ये लोग पार्टी को दीमक की तरह चाटकर बर्बाद कर दिया है. ऐसे लोगों से तेजस्वी यादव घिरे हुए हैं और अब उनका पार्टी में रहना उचित नहीं है. बिहार की सियासत में मृत्युंजय तिवारी एक जाना पहचाना नाम है .पार्टी के कद्दावर ब्राह्मण चेहरा और वरिष्ठ प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी का आरजेडी से इस्तीफा देना महज एक पद छोड़ना नहीं है,जिससे लालू परिवार के अपने सदस्य भी पिछले कुछ समय से जूझ रहे हैं।

पवार के दूतों ने एनडीए में जाने की अटकलों को किया खारिज



मुंबई। महाराष्ट्र में एनसीपी (शरद पवार गुट) के दो बड़े नेता जयंत पाटिल और जितेंद्र आव्हाड ने मुंबई में उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के घर पर 45 मिनट तक बंद कमरे में बैठक की. यह मुलाकात शिंदे के आवास %नंदनवन% में हुई. इससे पहले पाटिल ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से देर रात मुलाकात की थी. इन लगातार बैठकों के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में हलचल तेज हो गई और अटकलें लगने लगी हैं कि शरद पवार की पार्टी सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन में शामिल हो सकती है. हालांकि दोनों नेताओं ने इन अटकलों को सिर से खारिज कर दिया है. दोनों नेताओं का कहना है कि यह बैठक राजनीतिक गठजोड़ को लेकर नहीं, बल्कि उनके इलाके के विकास कार्यों को लेकर हुई थी. जयंत पाटिल ने आजतक से बातचीत में साफ किया कि उन्होंने शिंदे से मुलाकात शहरी विकास से जुड़े लंबित प्रोजेक्ट और एक नगर परिषद अध्यक्ष की अयोग्यता के खिलाफ अपील पर चर्चा करने के लिए की थी।

बद्रीनाथ मंदिर का पूर्व अधिकारी गिरफ्तार



नईदिल्ली। उत्तराखंड के चमोली जिले स्थित बद्रीनाथ धाम में चढ़ावे और दान में कथित गड़बड़ी के मामले में विशेष जांच दल ने बड़ी कार्रवाई की है. एसआईटी ने शुक्रवार को बद्री-केदार मंदिर समिति के पूर्व टेंपल अधिकारी राजेंद्र सिंह चौहान को गिरफ्तार कर लिया. जानकारी के मुताबिक, राजेंद्र सिंह चौहान 30 जून को ही अपने पद से रिटायर हुए थे. रिटायरमेंट के कुछ ही दिनों बाद एसआईटी ने उन्हें बद्रीनाथ मंदिर में चढ़ावे और दान से जुड़ी कथित अनियमितताओं और चोरी की जांच के सिलसिले में गिरफ्तार किया है. पूर्व अधिकारी को सीसीटीवी फुटेज में 22, 25 और 29 जून को गणना कक्ष से नकदी चुराते हुए देखा गया था. एसआईटी द्वारा चार घंटे की लंबी पूछताछ के बाद चौहान को एसआईटी ने शुक्रवार को दोपहर 2ः59 बजे गिरफ्तार कर लिया गया है. उन्हें अब शनिवार को कोर्ट के सामने पेश किया जाएगा. एसआईटी इस मामले की जांच कर रही है. जांच में मिले तथ्यों के आधार पर यह कार्रवाई की गई. फिलहाल राजेंद्र सिंह चौहान से पूछताछ की जा रही है और मामले में आगे की जांच जारी है।

चिकन नेक पर दिल्ली की पैनी नजर

शाह के बंगाल दौरे पर ढाका-चीन की निगाहें

कोलकाता। ढाका और बीजिंग के बदलते रणनीतिक समीकरणों तथा तीस्ता परियोजना में चीन की बढ़ती भूमिका के बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का उत्तर बंगाल दौरा राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। देश की सामरिक जीवनरेखा कहे जाने वाले सिलिगुड़ी कॉरिडोर यानी %चिकन नेक% की सुरक्षा को लेकर होने वाली उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक पर जहां नई दिल्ली की पैनी नजर है, वहीं रणनीतिक और सुरक्षा हलकों के मुताबिक बांग्लादेश और चीन भी इस घटनाक्रम पर करीब से नजर रखे हुए हैं।



कार्यकाल में सिलिगुड़ी कॉरिडोर को लेकर अब तक की सबसे महत्वपूर्ण सुरक्षा समीक्षाओं में से एक मान रहे हैं। तीन दिवसीय दौरे पर शुक्रवार रात बागडोगरा पहुंचे शाह का भाजपा नेताओं ने स्वागत किया।

करीब 20 से 22 किलोमीटर चौड़ा सिलिगुड़ी कॉरिडोर भारत के आठ पूर्वोत्तर राज्यों को देश के बाकी हिस्से से जोड़ने वाला एकमात्र स्थलीय संपर्क मार्ग है। पूर्वोत्तर के करीब 5.5 करोड़ लोगों की नागरिक आपूर्ति, सैन्य रसद, रेलवे नेटवर्क, राष्ट्रीय राजमार्ग और व्यापारिक गतिविधियां इसी गलियारे पर निर्भर हैं। इस कॉरिडोर के पश्चिम में नेपाल, उत्तर में भूटान और चीन की चुंबी घाटी, जबकि दक्षिण में बांग्लादेश स्थित है। यही वजह है कि इसे भारत का सबसे संवेदनशील भू-रणनीतिक क्षेत्र माना जाता है। सुरक्षा विशेषज्ञों के अनुसार किसी भी संकट, सैन्य तनाव या बड़े

व्यवधान का सीधा असर पूरे पूर्वोत्तर भारत पर पड़ सकता है। सूत्रों के मुताबिक, हाल के महीनों में क्षेत्रीय भू-राजनीतिक गतिविधियों ने नई दिल्ली की चिंताओं को बढ़ाया है। बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने 24 जून 2026 को अपनी पहली विदेश यात्रा के तहत चीन का दौरा किया था। इस दौरान उन्होंने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और प्रधानमंत्री ली कियांग के साथ विस्तृत द्विपक्षीय वार्ता की। रणनीतिक हलकों में सबसे अधिक चर्चा तीस्ता नदी प्रबंधन परियोजना को लेकर हुई, जिस पर ढाका और बीजिंग के बीच महत्वपूर्ण सहमति बनी। भारत की ओर से पहले दिए गए प्रस्ताव के बावजूद परियोजना में चीन की बढ़ती भागीदारी को नई दिल्ली ने गंभीरता से लिया है।

सुरक्षा विश्लेषण से जुड़े सूत्रों का कहना है कि चीन के बढ़ते क्षेत्रीय प्रभाव और बांग्लादेश के साथ उसके मजबूत होते संबंधों के बीच भारत सिलिगुड़ी कॉरिडोर की सुरक्षा को लेकर कोई जोखिम नहीं लेना चाहता। ऐसे में गृह मंत्री का स्वयं उत्तर बंगाल पहुंचकर सीमा चौकियों का दौरा करना और सुरक्षा एजेंसियों के साथ समीक्षा करना विशेष महत्व रखता है।

ऑपरेशन सिंदूर से दुनिया ने देखा भारत का दम

डिफेंस प्रोडक्शन में रचेंगे नया इतिहास : राजनाथ

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की विश्व-स्तरीय रक्षा तैयारियों को साबित किया है। उन्होंने इसकी सफलता का श्रेय केंद्र सरकार द्वारा सेना के आधुनिकीकरण और देश में ही रक्षा उपकरणों के उत्पादन को लगातार बढ़ावा देने को दिया। नई दिल्ली में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर को भारतीय सशस्त्र बलों की क्षमता और वीरता का प्रमाण बताया और कहा कि उन्होंने आतंकवादियों और उनके समर्थकों को मुंहतोड़ जवाब दिया। सिंह ने कहा ऑपरेशन सिंदूर भारत की आधुनिक और बेहतरीन रक्षा तैयारियों का सबूत है। ये तैयारियाँ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की पिछले 12 सालों की लगातार कोशिशों से और बेहतर हुई हैं, जिसमें राष् पहले और सेना पहले की भावना को प्राथमिकता दी गई है।

सिंह के अनुसार, इस ऑपरेशन के दौरान आकाश तीर एयर डिफेंस सिस्टम, आकाश मिसाइल सिस्टम और ब्रह्मोस मिसाइल जैसे स्वदेशी सिस्टम के साथ-साथ अन्य आधुनिक सैन्य उपकरणों को भी प्रभावी ढंग से तैनात किया गया था। रक्षा मंत्री ने कहा इस ऑपरेशन के दौरान आकाश तीर, आकाश मिसाइल सिस्टम और ब्रह्मोस जैसे



एडवॉंस्ड सिस्टम के साथ-साथ कई अन्य अत्याधुनिक उपकरणों का भी प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया गया। यह पिछले 12 वर्षों में तैयार की गई नींव की वजह से संभव हुआ है। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए सरकार की कोशिशों का जिक्र करते हुए सिंह ने कहा कि सशस्त्र बलों की ओर से जारी स्वदेशीकरण की पाँच सकारात्मक सूचियों में अब 509 रक्षा आइटम शामिल हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि 2014 की तुलना में 2025-26 में भारत का सालाना रक्षा उत्पादन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। सिंह ने कहा हमारा सालाना डिफेंस प्रोडक्शन 2014 में लगभग 40,000 करोड़ रुपये से बढ़कर फाइनेंशियल ईयर 2025-26 में रिकॉर्ड 1.78 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। हमारा लक्ष्य इस साल डिफेंस प्रोडक्शन को 2 लाख करोड़ रुपये और 2029 तक 3 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े से आगे ले जाना है।

वांगचुक के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई पर कांग्रेस का सरकार पर हमला

कहा- अधिकारों का हो रहा दमन

नई दिल्ली। कांग्रेस ने शनिवार को जंतर-मंतर पर हुई पुलिस कार्रवाई की आलोचना की। इस कार्रवाई के बाद से कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को अस्पताल में भर्ती कराया गया। कांग्रेस का आरोप है कि यह सरकार की उस मानसिकता को दर्शाता है कि शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन एक मौलिक लोकतांत्रिक अधिकार नहीं है जिसे संरक्षित किया जाना चाहिए। सरकार के लिए यह कानून-व्यवस्था की समस्या है जिसे कुचल दिया जाना चाहिए।

भाजपा पर हमला करते हुए विपक्षी दल ने यह भी कहा कि यह शर्म की बात है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र पर दुनिया की सबसे अलोकतांत्रिक और लोकतंत्र विरोधी राजनीतिक पार्टी का शासन हो रहा है। कांग्रेस के मीडिया और प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा कि संविधान असहमति व्यक्त करने के अधिकार की गारंटी देता है, लेकिन गृह मंत्रालय इसे नकारने पर तुला हुआ प्रतीत होता है। खेड़ा ने कहा दिल्ली पुलिस सीधे गृह मंत्रालय के अधीन है। वहीं, मंत्रालय जिसने शुक्रवार को ही दिल्ली में एक नए पुलिस आयुक्त की नियुक्ति की है। अगर आज की कार्रवाई उनकी पहली जिम्मेदारी है, तो यह एक भयावह संदेश देती है। राजनीतिक आज्ञापालन संवैधानिक कर्तव्य से अधिक महत्वपूर्ण है।

उन्होंने आरोप लगाया कि महिला पहलवानों को घसीटकर ले जाने से लेकर पूर्व सैनिकों के साथ दुर्व्यवहार करने तक। इस सरकार ने बार-बार संविधान के प्रति अपनी अवमानना का प्रदर्शन किया है। खेड़ा ने कहा, आज की कार्रवाइयों से इस सरकार की मानसिकता साफ हो गई है। शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन एक मौलिक लोकतांत्रिक अधिकार नहीं है जिसकी रक्षा की जानी चाहिए, बल्कि यह कानून-व्यवस्था की एक समस्या है जिसे कुचल दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, यह शर्मानक है कि दुनिया के



सबसे बड़े लोकतंत्र पर दुनिया की सबसे अलोकतांत्रिक और लोकतंत्र विरोधी राजनीतिक पार्टी का शासन हो रहा है।

जंतर-मंतर पर नीट प्रोटेस्ट के बीच अभिजीत दिपके पर फेंकी स्याही

शनिवार को जंतर-मंतर पर उस समय अफरा-तफरी मच गई जब एक महिला ने कांक्रोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दिपके पर स्याही जैसा तरल पदार्थ फेंक दिया, जब वे विरोध स्थल पर एक सभा को संबोधित कर रहे थे। इस घटना के कारण कार्यक्रम में थोड़ी देर के लिए बाधा उत्पन्न हुई क्योंकि समर्थक मंच की ओर दौड़ पड़े, जिससे हंगामा मच गया। यह घटना विरोध-प्रदर्शन वाली जगह पर बड़े हुए तनाव के बीच हुई, जहाँ सीजेपी के कार्यकर्ता 6 जून से प्रदर्शन कर रहे हैं। यह संगठन कथित नीट पेपर लोक मामले को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहा है। इससे पहले दिन में, 20 दिनों से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठे वांगचुक की तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। उन्हें दिल्ली हाई कोर्ट के निर्देश और मेडिकल एक्सपर्ट्स की सलाह पर अस्पताल ले जाया गया। इसके कुछ ही देर बाद, दिपके ने दिल्ली पुलिस पर वांगचुक को ज़बरदस्ती हटाने का आरोप लगाया और कहा कि जंतर-मंतर पहुंचने की कोशिश के दौरान उनके साथ मारपीट की गई। दिपके ने कहा कि विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा। यह बहुत शर्मनाक है। चोरों और गुंडों की तरह, दिल्ली पुलिस ने उन्हें (सोनम वांगचुक) छिपाया और घसीटते हुए ले गई। यह दिल्ली पुलिस नहीं है; ये आरएसएस के गुंडे हैं। वे चुपके से आए और चोरों की तरह सोनम सर को चादर से ढका, छिपाया और घसीटते हुए ले गए, ठीक वैसे ही जैसे अपराधी या माफिया लोगों का अपहरण करते हैं।

खेल प्रमुख समाचार

फीफा वर्ल्ड कप का फाइनल मुकाबला आज



न्यू जर्सी। लगभग एक महीने के रोमांचक मुकाबलों के बाद, फीफा वर्ल्ड कप 2026 का फाइनल मैच रविवार, 19 जुलाई (20 जुलाई भारतीय समय के अनुसार) को दो फाइनलिस्ट टीमें अर्जेंटीना और स्पेन के बीच खेला जाएगा। ये प्रतिष्ठित खिताब मुकाबला न्यू जर्सी के मेटलाइफ स्टेडियम में खेला जाएगा। वर्ल्ड कप फाइनल में अर्जेंटीना अपने खिताब का बचाव करने उतरेगी, जबकि स्पेन पहली बार विश्व कप जीतने के लक्ष्य के साथ मैदान में होगा। मुकाबले की सबसे बड़ी कहानी मेसी और यमाल की आमने-सामने की टक्कर मानी जा रही है। मेसी ने स्पेन की टीम और यमाल की तारीफ करते हुए कहा कि उनके पास शानदार खिलाड़ी और बेहतरीन खेलने की शैली है। हालांकि अर्जेंटीना भी अपनी ताकत के साथ मैदान में उतरेगा। लमिन यमाल ने बार्सिलोना में वही प्रतिष्ठित नंबर-10 जर्सी पहनी है, जिसे कभी मेसी ने लंबे समय तक पहना था। 2024-25 सीजन में शानदार प्रदर्शन के बाद उन्हें यह जिम्मेदारी मिली। यमाल ने उस सीजन में बार्सिलोना के लिए 18 गोल और 25 असिस्ट किए। उनके प्रदर्शन की बदौलत क्लब ने ला लीगा, कोपा डेल रे और स्पेनिश सुपर कप का खिताब जीता और चैंपियंस लीग के सेमीफाइनल तक पहुंचा। बार्सिलोना ने यमाल के साथ लंबी अवधि का करार किया है और वह 2031 तक क्लब के साथ बने रहेंगे। मेसी ने कहा कि यमाल ने केवल 19 साल की उम्र में खुद को एक वैश्विक पहचान बना लिया है और उसके पास इतिहास रचने का शानदार मौका है। उन्होंने कहा, लमिन एक शानदार खिलाड़ी है। उसका पूरा करियर अभी उसके सामने है। उसके पास कुछ ऐतिहासिक हासिल करने का मौका है, लेकिन हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे कि यह मौका इस बार न आए। मेसी ने यह भी कहा कि वह यमाल की सफलता का कामना करते हैं, क्योंकि उसकी सफलता बार्सिलोना के लिए भी अच्छी खबर है।

आर्थिक/वणिज्य/वित्त/प्रमुख समाचार

प्रमुख समाचार

भारत के पहले प्राइवेट रॉकेट विक्रम-1 ने भरी उड़ान

नई दिल्ली। लॉन्चिंग आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से दोपहर 12:05 बजे की गई। हालांकि, इस कामयाबी से पहले कुछ मुलों के लिए सांसें थम गई थीं। तय शेड्यूल के मुताबिक रॉकेट को सुबह 11:30 बजे उड़ान भरनी थी, लेकिन लॉन्चिंग से ठीक 5 मिनट पहले काउंटडाउन को अचानक रोकना पड़ा। कुछ देर तक होल्ड पर रखने के बाद काउंटडाउन दोबारा शुरू किया गया और विक्रम-1 ने आसमान की ओर रुख किया। विक्रम-1 भारत का पहला निजी तौर पर विकसित रॉकेट है जिसे उपग्रहों (सैटेलाइट्स) को अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका प्रक्षेपण (लॉन्च) देश के अंतरिक्ष अभियानों को सरकारी नेतृत्व से उद्योग (प्राइवेट सेक्टर) के नेतृत्व में ले जाने की दिशा में एक बड़ा मील का पथर है। मिशन आगमन स्कार्फ़्ट एयरोस्पेस की पहली ऑर्बिटल टेस्ट फ्लाइट है।

एक्सिस बैंक को पहली तिमाही में 7114 करोड़ रुपए का मुनाफा

मुंबई। निजी क्षेत्र के एक्सिस बैंक को चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में एकल आधार पर 7,114 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ हुआ है जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही से 23 प्रतिशत अधिक है। बैंक ने शनिवार को निदेशक मंडल की बैठक के बाद वित्तीय परिणामों की घोषणा की। उसने बताया कि पहली तिमाही में ब्याज से प्राप्त शुद्ध आय आठ प्रतिशत बढ़कर 14,646 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। ब्याज से प्राप्त शुद्ध आय ग्राहकों से ऋण पर लिए गए ब्याज और ग्राहकों को जमा राशि पर दिए गए ब्याज का अंतर है। आलोच्य तिमाही में बैंक का परिचालन लाभ भी पांच फीसदी ऊपर 11,659 करोड़ रुपए पर रहा। बैंक ने तिमाही में कुल 2,223 करोड़ रुपए का प्रावधान किया जिसमें 2,079 करोड़ रुपए का प्रावधान डूबे हुए या जोखिम में फंसे ऋण के लिए किया गया है।

विदेशी मुद्रा भंडार एक हफ्ते में 96.4 करोड़ डॉलर बढ़ा

मुंबई। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 10 जुलाई को समाप्त सप्ताह में 96.4 करोड़ डॉलर बढ़कर 675.15 अरब डॉलर पर रहा। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने यह जानकारी दी। इससे पिछले सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार 7.26 अरब डॉलर बढ़कर 674.19 अरब डॉलर पर पहुंच गया था। इस साल 27 फरवरी को समाप्त सप्ताह में पश्चिम एशिया संघर्ष शुरू होने से पहले देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 728.49 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया था। हालांकि, संघर्ष के कारण रुपए पर दबाव बढ़ा और रिजर्व बैंक को विदेशी मुद्रा बाजार में डॉलर बेचकर हस्तक्षेप करना पड़ा। इसके बाद कई सप्ताह तक विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट दर्ज की गई। केंद्रीय बैंक के आंकड़ों के अनुसार, 10 जुलाई को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के प्रमुख घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां 93 करोड़ डॉलर बढ़कर 546.51 अरब डॉलर हो गईं।

जून तिमाही में स्मार्टफोन की बिक्री 10 प्रतिशत घटी

नईदिल्ली। भारत के स्मार्टफोन बाजार में सुस्ती गहराती जा रही है। जून तिमाही में स्मार्टफोन की बिक्री सालाना आधार पर 10 प्रतिशत घट गई, जो पिछले तीन वर्षों की सबसे बड़ी तिमाही गिरावट है। सबसे ज्यादा असर 15,000 रुपए से कम कीमत वाले बजट स्मार्टफोन पर पड़ा, जहां बिक्री में 45 प्रतिशत तक की भारी गिरावट दर्ज की गई। काउंटरपॉइंट रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार, इस गिरावट का सबसे अधिक असर उन चीनी कंपनियों पर पड़ा, जिनका कारोबार मुख्य रूप से एंट्री-लेवल और मिड-रेंज स्मार्टफोन पर आधारित है। नतीजतन, अप्रैल-जून तिमाही में चीनी ब्रांड्स की संयुक्त बाजार हिस्सेदारी 2020 के बाद अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई। वीवो 17.8% मार्केट शेयर के साथ सबसे बड़ा स्मार्टफोन ब्रांड बना रहा।

मजबूत बनी हुई है भारतीय अर्थव्यवस्था

पर पड़ा दबाव कम होने लगा है। विश्लेषकों के मुताबिक, यदि पश्चिम एशिया में युद्ध के हालात नहीं बनते, तो भारतीय कंपनियों के मुनाफे पर पड़ने वाला प्रभाव शुरुआती आशंकाओं की तुलना में आधा रह सकता है। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत कच्चे तेल का बड़ा आयातक है तथा तेल की कीमतों में थोड़ी भी वृद्धि महंगाई, चालू खाते के संतुलन और उद्योगों की लागत पर व्यापक असर डाल सकती है। अच्छी बात यह है कि पश्चिम एशिया का झटका फिलहाल नियंत्रित किया जा सकने वाला लग रहा है।

जनवरी के अंत तक भारत का विदेशी मुद्रा भंडार करीब 723.8 अरब डॉलर था। भारतीय रिजर्व बैंक के मुताबिक, यह भंडार एक वर्ष से अधिक अवधि का आयात पूरा करने के लिए पर्याप्त है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार नीति-निर्माताओं को यह क्षमता देता है कि वे अस्थिरता का सामना करते हुए भी



आर्थिक विकास की गति बनाये रख सकें। विश्व बैंक ने कहा है कि ऊर्जा की ऊंची कीमत और आपूर्ति शृंखला में व्यवधान के बावजूद भारत 2026-27 में 6।6 फीसदी की अनुमानित वृद्धि के साथ सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में बना रहेगा।

घरेलू आर्थिक गतिविधियां अब भी विकास का मुख्य आधार बनी हुई हैं। वर्ष 2025-26 में भारत की वास्तविक जीडीपी 7.7 प्रतिशत बढ़ी, जबकि चौथी तिमाही की वृद्धि दर 7.8 फीसदी रही। जून में भारत का संयुक्त पीएफआइ 57.4 पर रहा, जो 50 से

काफी ऊपर है यानी निजी क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों के विस्तार की पर्याप्त संभावना अब भी मौजूद है। इससे मजबूत गतिविधियां बाहरी झटकों के असर को कम कर सकती हैं। चूंकि महंगाई आर्थिक चक्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू बन गयी है, ऐसे में नीति-निर्माताओं को कीमतों में संभावित उतार-चढ़ाव पर विशेष ध्यान देना होगा। खुदरा महंगाई अप्रैल के 3.48 फीसदी से बढ़कर मई में 3.93 फीसदी हो गयी, जबकि थोक महंगाई 9.68 फीसदी तक पहुंच गयी।

यह ऊर्जा संकट और उत्पादन लागत बढ़ने का परिणाम है। बेशक ये आंकड़े अत्यधिक चिंताजनक नहीं हैं, पर बताते हैं कि वैश्विक आपूर्ति संबंधी झटके घरेलू कीमतों को तेजी से प्रभावित कर सकते हैं। अच्छी बात यह है कि पिछले संकटों की

तुलना में फिलहाल महंगाई काफी नियंत्रित है। इससे रिजर्व बैंक और सरकार को जल्दबाजी में कठोर कदम उठाने की जरूरत नहीं होगी। यदि होमुंग जलडमरूमध्य में सामान्य स्थिति बहाल होती है, तो समुद्री परिवहन संबंधी अनिश्चितता कम होगी, बीमा प्रीमियम घटेंगे, माल ढुलाई की लागत कम होगी और ऊर्जा, रसायन, उर्वरक तथा अन्य औद्योगिक कच्चे का आयात करने वाली कंपनियों के लिए आपूर्ति की योजना बनाना अधिक आसान हो जायेगा। आंकड़े ये भी दर्शाते हैं कि जनवरी से मार्च की तिमाही में भारत का चालू खाता अप्रत्याशित रूप से आधिशेष में पहुंच गया। इसका मुख्य कारण सेवा क्षेत्र से हुई मजबूत आय और विदेशों से आने वाला धन (रेमिटेंस) था। यह भारत की बाहरी आर्थिक मजबूती को दर्शाता है। हालांकि यह स्थिति आने वाली तिमाहियों में भी रहेगी, इसकी संभावना कम है।

जनता के विश्वास के खिलाफ है अविश्वास प्रस्ताव: सीएम साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने विधानसभा में विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा का जवाब देते हुए कहा कि यह प्रस्ताव सरकार के विरुद्ध नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की तीन करोड़ जनता के विश्वास के विरुद्ध है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में जनता ने भारतीय जनता पार्टी को 54 सीटों का स्पष्ट जनादेश दिया, लोकसभा चुनाव में 11 में से 10 सीटों पर विजय दिलाई और प्रदेश के अधिकांश नगरीय निकायों में भी भाजपा के पक्ष में जनादेश दिया। ऐसे में विपक्ष का यह अविश्वास प्रस्ताव जनता के निर्णय का ही अपमान है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विपक्ष यह बताए कि उसका अविश्वास आखिर किस पर है—क्या उन लगभग 25 लाख किसानों पर, जिन्हें भाजपा सरकार ने 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी का लाभ दिया? क्या उन 70 लाख से अधिक माताओं—बहनों पर, जिन्हें महतारी वंदन योजना के माध्यम से हर माह एक हजार रुपये की सम्मान राशि मिल रही है? या उन

करोड़ों प्रदेशवासियों पर, जिन्होंने विकास, सुशासन और विश्वास की राजनीति को अपना समर्थन दिया है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस जनता का विश्वास पहले ही खो चुकी है। जनता ने पाँच वर्षों तक उनके शासन को परखा और सत्ता से बाहर कर दिया। आज वही कांग्रेस जनता द्वारा चुनी गई सरकार पर अविश्वास जताकर अपनी राजनीतिक हताशा और नैतिक पराजय का परिचय दे रही है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि उनकी सरकार का ढाई वर्षों का प्रत्येक दिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की गारंटी को धरातल पर उतारने के लिए समर्पित रहा है। सरकार ने चुनाव के दौरान किए गए अधिकांश प्रमुख वादों को पूरा किया है और विकास तथा सुशासन को प्राथमिकता देते हुए हर वर्ग तक योजनाओं का लाभ पहुँचाया है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने सत्ता में आते ही किसानों के हित में ऐतिहासिक निर्णय लिए। लगभग 25 लाख किसानों से 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी की गई तथा दो वर्षों के बकाया बोनस के रूप

में 3716 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। सिंचाई क्षमता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जहाँ पिछली सरकार के कार्यकाल में प्रतिवर्ष औसतन लगभग 9,600 हेक्टेयर सिंचाई क्षमता बढ़ी, वहीं वर्तमान सरकार के कार्यकाल में यह बढ़कर लगभग 19,500 हेक्टेयर प्रतिवर्ष हो गई है। केवल दो वर्षों में 11 हजार करोड़ रुपये से अधिक की सिंचाई परियोजनाओं को प्रशासनिक स्वीकृति दी गई।

ग्रामीण विकास के क्षेत्र में मुख्यमंत्री ने कहा कि मनरेगा के साथ—साथ वीबी—जी रामजी योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और स्थायी परिसंपत्तियों के निर्माण को नई गति मिली है। अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण नागरिकों को बैंकिंग, प्रमाण पत्र, पेंशन सहित अनेक सेवाएँ गाँव में ही उपलब्ध हो रही हैं। हस्तशिल्प और



ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने के लिए देश के प्रमुख हवाई अड्डों पर छत्तीसगढ़ के उत्पादों के शोरूम स्थापित किए जा रहे हैं।

महिला सशक्तिकरण को सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियों में बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि महतारी वंदन योजना के अंतर्गत अब तक 70 लाख महिलाओं को 18 हजार 800 करोड़ रुपये से अधिक की सम्मान राशि प्रदान की जा चुकी है। प्रदेश में 10 लाख 40 हजार से अधिक महिलाओं को लखपति दीदी बनाया गया है। महिलाओं के नाम संपत्ति पंजीयन को प्रोत्साहित करने के लिए रजिस्ट्री शुल्क में 50 प्रतिशत तथा स्टाम्प शुल्क में एक प्रतिशत की छूट दी गई है, जिससे

कैरियर काउंसिलिंग से छात्राओं को मिली उज्ज्वल भविष्य की दिशा

रायपुर। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ाने तथा उनके भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य से शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी अन्वसर उपलब्ध हैं और हर विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुसार सफलता हासिल कर सकता है। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति की पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि उसकी मेहनत, लगन और संकल्प उसके भविष्य का निर्धारण करते हैं। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों की तुलना दूसरों से नहीं करने और उन्हें अपनी पसंद के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर देने की बात कही। कार्यक्रम में विधायक एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक ने शिक्षा को सफलता का सबसे मजबूत माध्यम बताते हुए विद्यार्थियों से स्पष्ट लक्ष्य तय करने का आग्रह किया। विधायक पुरंदर मिश्रा ने भी अनुशासन, निरंतर सीखने और कठिन परिश्रम को सफलता की कुंजी बताया।

बच्चों की हताशा आत्महत्या की जिम्मेदार मोदी सरकार: दीपक बैज

रायपुर। नीट 2 के परिणाम के बाद जगदलपुर के अड़वल की एक बच्ची सुरला हारिका राव ने परिणाम से व्यथित होकर आत्महत्या कर लिया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि बताते है कि रह हुई नीट परीक्षा में बच्ची के अंक ज्यादा हा रहे थे तथा नीट 2 के बाद उसके अंक कम आये इससे दुखी होकर उसने अपनी जान दे दिया। इस बच्ची की मौत और इस प्रकार से अन्य बच्चों की मौतों और उनकी हताशा के लिए मोदी सरकार जिम्मेदार है। मोदी सरकार के राज में नीट के परीक्षा में जो गड़बड़िया हुई तथा परीक्षा रह हुई उससे बच्चे निराश हुये जिनका पेपर पहली बार अच्छा गया था वे बच्चे तो, बहुत ज्यादा निराश हुए थे और उसी निराश में बच्चे आत्मघाती कदम उठा रहे।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि नीट देशभर के लाखों



बच्चों के न सिर्फ भविष्य उनकी भावनाओं से जुड़ा हुआ विषय 1 वर्षों तक कठिन मेहनत

करके बच्चे नीट रहे थे तथा नीट 2 के बाद उसके अंक कम आये इससे दुखी होकर उसने अपनी जान दे दिया। इस बच्ची की मौत और इस प्रकार से अन्य बच्चों की मौतों और उनकी हताशा के लिए मोदी सरकार जिम्मेदार है। मोदी सरकार के राज में नीट के परीक्षा में जो गड़बड़िया हुई तथा परीक्षा रह हुई उससे बच्चे निराश हुये जिनका पेपर पहली बार अच्छा गया था वे बच्चे तो, बहुत ज्यादा निराश हुए थे और उसी निराश में बच्चे आत्मघाती कदम उठा रहे।

और एनटीए के डीजी को पद से हटा दिया, लेकिन जैसे ही लोगों का गुस्सा शांत हुआ, इन्हें स्टील मिनिस्ट्री में पोस्टिंग दे दी, उसके बाद छत्तीसगढ़ की भर्ती परीक्षाओं का प्रमुख बना दिया और अब ये छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव हैं। बेहद स्पष्ट है कि पेपर लोक के असल गुनहगारों को भाजपा सरकार का संरक्षण है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा सरकार में इसी तरह छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ करने वालों को इनाम दिया जाता है, उन्हें बड़े-बड़े पदों पर बैठाया जाता है। कारण साफ है— पेपर लोक के इस गोरखंधे में भाजपा सरकार खुद ही साझेदार है, जिसका खामियाजा देश के मेहनती छात्रों को चुकाना पड़ रहा है। भाजपा की सरकार में परीक्षा की सुविधा लगातर भंग हो रही है।

छत्तीसगढ़/राजधानी प्रमुख समाचार

छत्तीसगढ़ में आरटीई की 9,242 सीटें खाली

रायपुर। प्रदेश के निजी स्कूलों में शिक्षा का अधिकार (आरटीई) के तहत प्रवेश की प्रक्रिया दो चरणों में पूरी हो गई है। अभी भी लगभग 9242 सीटें रिक्त हैं। जिसे देखते हुए लोक शिक्षण संचालनालय की ओर से तृतीय व अंतिम चरण की प्रवेश प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसमें शामिल होने के लिए पात्र आवेदक आरटीई पोर्टल <https://rte.cgc.nic.in/Student/StudentApplication.asp> के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन 22 जुलाई से 5 अगस्त तक कर सकते हैं। उसके बाद नोडल प्राचार्य के द्वारा आवेदनों का परीक्षण व सत्यापन के बाद 10 से 14 अगस्त तक ऑनलाइन लॉर्टरी व काउंसिलिंग के माध्यम से सूची जारी की जाएगी। जिसके बाद बच्चों को 17 अगस्त से 25 अगस्त के बीच प्रवेश लेना होगा। लोक शिक्षण संचालनालय के अधिकारियों से प्राप्त डाटा के अनुसार, राज्य में 6858 प्राइवेट स्कूलों में आरटीई की 23124 सीटें हैं। दो चरणों के बाद इनमें से लगभग 13882 सीटों में प्रवेश पूरा हो चुका है। चयनित स्टूडेंट्स को 17 जुलाई तक प्रवेश लेना था। रायपुर में संचालित 824 प्राइवेट स्कूलों में आरटीई की 3204 सीटें हैं। जिनमें से अब तक 2458 सीटों में प्रवेश पूरा हो चुका है। ऐसे ही बिलासपुर के 562 स्कूलों की 2228 सीटों में से 1398 पर प्रवेश हुए हैं, दुर्ग के 531 स्कूल की 1581 सीटों में से 1042, बलरामपुर के 190 स्कूल की 1524 सीटों में से 795, मुंगेली के 226 स्कूल की 1011 सीटों में से 699 पर प्रवेश हो चुके हैं।

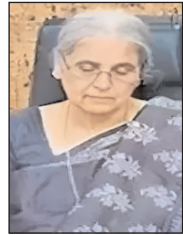
के के रोड मौदहापारा का अब हुआ कृष्ण कुमार शर्मा मार्ग



रायपुर। नगर निगम ने राजधानी रायपुर के सबसे व्य्वस्तम मार्गों में से एक के के रोड मौदहापारा का नाम परिवर्तित कर उसे कृष्ण कुमार शर्मा मार्ग कर दिया है। इस नाम परिवर्तन के बाद अब जयस्तम्भ चौक से फाफाडीह चौक तक के मध्य के मार्ग कृष्ण कुमार शर्मा मार्ग कहलाएगा । रायपुर दक्षिण विधायक श्री सुनील सोनी ने विगत दिनों अपने विधानसभा क्षेत्र के ब्राह्मणपारा वार्ड का निरीक्षण करने पहुंचे थे। इस निरीक्षण के दौरान स्वर्गीय कृष्ण कुमार शर्मा के परिवारजनों ने उनसे मुलाकात कर कृष्ण कुमार शर्मा मार्ग नामकरण पट्टीका लगवाने का अनुरोध किया था। विधायक श्री सुनील सोनी ने तत्काल सज्ञान में लिया एवं नगर निगम सभापतिसूर्यकान्त राठौड़ से इस पर चर्चा कर उन्हें के के रोड मौदहापारा में कृष्ण कुमार शर्मा मार्ग की नामपट्टीका तत्काल बनवाकर लगवाने का सुझाव दिया। नगर निगम सभापति सूर्यकान्त राठौड़ ने तत्काल नगर निगम जोन 2 अधिकारियों को इस पर आवश्यक निर्देश देकर नगर निगम जोन 2 के माध्यम से कृष्ण कुमार शर्मा मार्ग नामकरण पट्टीका तत्काल बनवाकर उसे लगाया गया।

यूसीसी के प्रारूप तैयार करने के लिए समिति का गठन

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा राज्य में समान नागरिक संहिता लागू करने एवं इसके प्रारूप का मसौदा तैयार करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया है। समिति की अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्रीमती रंजना प्रकाश देसाई करेंगी। समिति में सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी श्री शत्रुघ्न सिंह तथा श्री एम. के. राऊत, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री मोहन पवार तथा



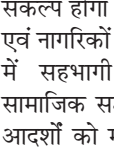
सेवानिवृत्त प्राचार्य श्रीमती ज्योति रानी सिंह को सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। समिति राज्य में समान नागरिक संहिता लागू करने के संबंध में वर्तमान विधिक स्थिति का अध्ययन करेगी। इसके साथ ही विवाह, तलाक, भरण-पोषण, उत्तराधिकार, दत्तक ग्रहण सहित संबंधित विषयों पर समान नागरिक संहिता के लिए सुझाव प्रस्तुत करेगी। समिति नागरिकों, सामाजिक संगठनों, विधि विशेषज्ञों एवं अन्य हितधारकों से सुझाव प्राप्त कर उनका अध्ययन करेगी। साथ ही अन्य राज्यों में लागू समान नागरिक संहिता संबंधी व्यवस्थाओं का भी परीक्षण किया जाएगा।समिति समान नागरिक संहिता का प्रारूप तैयार कर राज्य शासन को प्रस्तुत करेगी तथा इसके लिए आवश्यक विधायी एवं प्रशासनिक अनुशंसाएं भी उपलब्ध कराएगी।

केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल में सहायक कमांडेंट भर्ती परीक्षा 19 जुलाई को

रायपुर। संघ लोक सेवा आयोग , नई दिल्ली द्वारा आयोजित सेंट्रल आर्मड पुलिस फोर्स में सहायक कमांडेंट भर्ती परीक्षा-2026 का आयोजन 19 जुलाई 2026 को जिले के 4 परीक्षा केंद्रों में किया जाएगा। परीक्षा प्रथम पाली में प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक तथा द्वितीय पाली में दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षा में कुल 1704 अर्थथ्यी शामिल होंगे। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने परीक्षा की तैयारियों की समीक्षा करते हुए सभी पर्यवेक्षकों एवं संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर पेयजल, विद्युत, बैठक व्यवस्था तथा अन्य आवश्यक मूलभूत सुविधाएं पहले से सुनिश्चित कर ली जाएं। उन्होंने सभी दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि प्रत्येक परीक्षार्थी की प्रवेश से पूर्व फ्रिस्किंग एवं फेस ऑथेंटिकेशन की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से पूरी की जाए। परीक्षा से संबंधित गोपनीय सामग्री से वितरण 19 जुलाई को जिला कोषालय, रायपुर से किया जाएगा। परीक्षा के संचालन हेतु डिप्टी कलेक्टर नवीन ठाकुर को को –ऑर्डिनेटिंग सुपरवाइजर, डिप्टी कलेक्टर उत्तम प्रसाद रजक को सहायक को-ऑर्डिनेटिंग सुपरवाइजर एवं रोजगार अधिकारी विशेष रोजगार कार्यालय केंदारनाथ पटेल को कंट्रोल रूम प्रभारी नियुक्त किया गया है।

आप का प्रदेश स्तरीय अहम बैठक 20 को

रायपुर । आम आदमी पार्टी छत्तीसगढ़ प्रदेशभर की सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों में 21 जुलाई यानी मंगलवार को सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ करेगी। प्रदेश के जिलों, ब्लॉक एवं विधानसभा स्तर पर पार्टी के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और बड़ी संख्या में आमजन इस कार्यक्रम में भाग लेंगे। यह आयोजन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रदेश और देश में शांति, सद्भाव, सकारात्मक सोच, नैतिक मूल्यों और जनसेवा की भावना को मजबूत करने का सामूहिक



संकल्प होगा। पार्टी ने प्रदेश के सभी कार्यक्रमों। एवं नागरिकों से अपील की है कि वे इस आयोजन में सहभागी बनकर सकारात्मक राजनीति, सामाजिक सद्भाव, जनकल्याण और रामराज्य के आदर्शों को मजबूत करने के लिये इस अभियान का हिस्सा बनें। इस संबंध में पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी मिहिर कुर्मी ने बताया कि यह कार्यक्रम आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और छत्तीसगढ़ प्रदेश प्रभारी, दिल्ली के पूर्व मंत्री एवं वर्तमान विधायक मुकेश अहलावत के निर्देशानुसार आयोजित किया जा रहा है। पार्टी का मानना है कि आज समाज को कटुता, वैमनस्य और नकारात्मक राजनीति से ऊपर उठकर सत्य, सेवा, सद्भाव और राष्ट्रहित की भावना को अपनाने की जरूरत है।

मोवा ओवरब्रिज के नीचे होंडा शोरूम के नाली पाटों को निगम ने तड़वाया

रायपुर। नगर पालिक निगम

की महापौर मीनल चौबे और आयुक्त संबित मिश्रा के निर्देश पर नगर निगम जोन 3 जोन कमिश्नर प्रीति सिंह ने विगत दिनों जोन 3 क्षेत्र अंतर्गत लोधीपारा चौक के पास मोवा ओवरब्रिज के नीचे होंडा शो रूम के सम्बंधित संचालक सहित अन्य सम्बंधित संस्थानों के संचालकों को बारिश में नाले पर उनके बनाये गए अवैध पाटों के कारण सफाई नहीं होने एवं जलभराव की समस्या आने को लेकर नोटिस जारी किया कि वे स्वतः अपने व्यय से अवैध पाटों द्वाश तड़वाकर वहाँ सफाई करने हेतु चेम्पर बनवाएं, ताकि सफाई हो सके एवं जल के भराव की समस्या ना आये.



किन्तु नगर निगम जोन 3 नगर निवेश विभाग द्वारा जारी नोटिस के बाद भी होंडा शोरूम एवं अन्य सम्बंधित संस्थानों ने नाले पर निर्मित अवैध पाटों को स्वतः नहीं हटाया, इसे गंभीरता से लेते हुए जलभराव की समस्या दूर करने आज नगर निगम जोन 3 नगर निवेश विभाग की टीम द्वारा स्थल पर जेसीबी मशीन की सहायता से जोन 3 जोन कमिश्नर

प्रीति सिंह के मार्गनिर्देशन एवं कार्यपालन अभियंता ईश्वर लाल टावरे, सहायक अभियंता नरेश कुमार साहू, उप अभियंता पूनम साहू की उपस्थिति में मोवा ओवरब्रिज के नीचे लोधीपारा चौक के सम्पर्क होंडा शोरूम सहित अन्य सम्बंधित संस्थानों द्वारा अपने व्यवसायिक संस्थान के सामने नाले पर कब्जा जमाकर बनाये गए छह बड़े आकार के अवैध पाटों को तोड़ने की कड़ी कार्रवाई की एवं बारिश में जलभराव की समस्या दूर करने सफाई की बाधा हटाकर सफाई करवाकर गन्दे पानी की निकासी को सुगम बनाने जनहित में जनस्वास्थ्य सुरक्षा हेतु कार्य करवाया.